वृन्दा

वर्ष 21, अंक-5, पत्रिका पंजीकरण संख्या MP HIN 2003/11939

मई: 2023

❖वर्ष-इक्कीस ❖ अंक-5 ❖ ❖ मई -2023 ❖

Red No M. P. HIN 2003/11939

मासिक वृन्दा

सम्पादन परामर्श
श्री सुधेंदु ओझा-07701960982
सम्पादक
अंजना छलोत्रे
-84 61912125
कार्यकारी सम्पादक
आशा शैली- 7055336168
सम्पादकीय कार्यालय
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

मुद्रक/प्रकाशक/स्वत्वाधिकारी
सम्पादक -अंजना 'सवि'
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039

वृन्दा के सभी विवादों का वैधानिक क्षेत्र भोपाल रहेगा
लेखन सामग्री के लिए सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मूल्य-एक प्रति 12/-,
वार्षिक 120/-,
संस्था और पुस्तकालय हेतु 120/- वार्षिक

इस अंक में

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय		
'स्व' को अपनाकर ही.......डॉ उमेश प्रताप वत्स		03
कहानी		
प्रशस्ति	डॉ. मीरा राम निवास	06
ये मील के पत्थर	अंजना छलोत्रे	08
भारत देश महान (कविता)		
	-पूजल दशरथ विजय वर्गीय	10
यात्रा संस्मरण		
कश्मीर की सात दिवसीय अध्ययन यात्रा		
	मनु भारती	11
दो गीत	टीकम चन्दर ढोडरिया	14
कविता : नदी अंतर्मन की	राजेश्वरी जोशी	15
ख़ामोश आँखों से	स्नेहलता नेगी	15
ऐ खुशी सुन	-उदयवीर भारद्वाज	16
कलम मेरी कह रही है	-वीरेंद्र शर्मा	16
क्या आपको पता है?	फेउबुक से	17
लघुकथा : बैना	राजेश पाठक	19
जड़	सारिका चौरसिया	20
बच्चों कमें वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए...		
एक रपट	राजेंद्र ओझा	21
पारस (धारावाहिक उपन्यास)	आशा शैली	23
राष्ट्रभाषा का प्रश्न	सीताराम पाण्डेय	26
डूबता हुआ द्वीप	-सोफिया छलोत्रे	30

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, तथा स्वत्वाधिकारी सम्पादक अंजना द्वारा वृन्दा के लिए खो प्रिंटर्स तलैया चौक से मुद्रित व जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल 462 039 से प्रकाशित।

सम्पादकीय

एक समय की बात है, भारत के मध्य में एक छोटा सा गाँव था। गाँव अपने शांतिपूर्ण माहौल और सुंदर परिदृश्य के लिए जाना जाता था। एक दिन, गाँव के बनवारी नाम के एक युवा लड़के ने पास के जंगल का पता लगाने का फैसला किया। जब वह पेड़ों से होकर गुजरता भटक रहा था, तो उसे एक अजीब सी आवाज सुनाई दी जो उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। उसने ध्वनि का पीछा किया और एक बड़े पोखर के साथ एक सुंदर उद्यान देखा। बनवारी उद्यान की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गया और उसने हर दिन वहाँ वापस आने का फैसला किया।

वह जल्द ही अन्य ग्रामीणों से मुखातिब हुआ और उन सभी ने उद्यान के शांतिपूर्ण वातावरण का आनंद लिया। उद्यान गाँव में एक लोकप्रिय स्थान बन गया और बहुत से लोग आराम करने और सुंदर वातावरण का आनंद लेने आने लगे। यह परिवार और साथियों के साथ समय बिताने और कहानियाँ साझा करने के लिए एक आदर्श स्थान हो गया ।

दूसरी ओर भारत की पहाड़ियों में एक छोटा सा गाँव था। गाँव हरी-भरी पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ था और लोगों के एक छोटे समूह का घर था जो अपने साधारण जीवन से संतुष्ट थे। वे ज्यादातर किसान थे और जमीन से दूर रहते थे, लेकिन वे कुशल कारीगर और व्यापारी भी थे। एक दिन एक अजनबी गाँव में आया और उसने आश्रय मांगा। ग्रामीणों ने उनका खुले हाथों से स्वागत किया और उन्हें रहने के लिए जगह देने की पेशकश की। यह अजनबी एक बुद्धिमान व्यक्ति था और उसके पास एक विशेष उपहार था। वह पर्यावरण को सजीव बना सकता था। अजनबी ने अपनी शक्ति का उपयोग गाँव के चारों ओर एक सुंदर, प्राकृतिक परिदृश्य बनाने के लिए किया। उन्होंने पहाड़ियों को जीवंत रंगों में रंगा, पेड़ और फूल लगाये और हवा को फूलों की मीठी गंध से भर दिया। गाँव में हर कोई परिवर्तन से चकित और प्रसन्न था। अजनबी कुछ समय उनके साथ रहा और उन्हें पर्यावरण की देखभाल करना सिखाया। उन्होंने उन्हें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर रहने और उसे नुकसान से बचाने के तरीके बताये। ग्रामीणों ने अजनबी को धन्यवाद दिया और उसके जाने पर उसके अच्छे होने की कामना की। उन्होंने उस स्थान का नाम प्रयावरन रखा, जिसका हिंदी में अर्थ होता है ''संरक्षित पर्यावरण''। गाँव आज भी खड़ा है, पर्यावरण संरक्षण की शक्ति और अजनबियों की दया का एक वसीयतनामा बनकर।

किसी भी बात को कहने के लिए यह बहुत अच्छी विधा है कि हम उसे किसी कहानी के साथ जोड़कर देखें। तात्पर्य निकलता है कि आज के वातावरण में पर्यावरण की भूमिका अगर हम अभी नहीं समझ रहे हैं तो विनाश निश्चित है इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए जहाँ जैसा भी बने अपने घर, गाँव, खेत, मकान और खाली पड़ी जमीनों में भी आप वृक्षारोपण कर सकते हैं जो हमारे लिए ऑक्सीजन देता है क्या हम उस साधन को, उस माध्यम को बचाकर नहीं रख सकते? सोचने का विषय है यह।

अंजना छलोत्रे 'सवि'

'स्व' को अपनाकर ही भारत स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बन पायेगा

-डॉ. उमेश प्रताप वत्स

देश को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने में युवाओं की महती भूमिका आवश्यक है। जिस प्रकार देश में आजादी के दौरान चले राष्ट्रीय आंदोलन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव 'स्व' का था अर्थात् स्वधर्म, स्वराज और स्वदेशी वैसे ही राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में यह भाव देश के प्रत्येक नागरिक में होना आवश्यक है। वास्तव में हम जिस प्रकार के नागरिक, जैसा समाज और राष्ट्र बनाना चाहते हैं ठीक उसी के अनुरूप ही देश की शिक्षा का स्वरूप होना चाहिए। स्वावलंबी भारत अभियान स्व की भावना पर आधारित सराहनीय पहल है। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने विभिन्न अवसरों पर दिए गए अपने उद्बोधनों में स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल के लिए लोगों में जागरूकता फैलाने की अपील करते हुए कहा है कि हमें 'स्व' पर आधारित तंत्र पर निर्भर रहना सीखना होगा।

यह अभियान किसी एक संगठन के द्वारा न चलाकर देश के सत्तर करोड़ से अधिक युवाओं को चलाना होगा। वर्तमान परिदृश्य में भारत सॉफ्टवेयर से लेकर सेटेलाइट तक के माध्यम से दूसरे देशों के विकास को गति दे रहा है और दुनिया के विकास में प्रमुख इंजन की भूमिका निभा रहा है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से भारत वैश्विक आपूर्ति में व्यापक योगदान के लिए तैयार हो रहा है। किसी संकट की स्थिति में हमारी सभी जरूरतें स्थानीय स्तर पर अर्थात अपने देश में ही पूरी हो सकें, इसके लिए हर क्षेत्र में तेज गति से काम हो रहा है। इसके पाँच प्रमुख स्तंभ अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी, गतिशील जनसांख्यिकी एवं मांग हैं। केंद्र सरकार ने 'वोकल फॉर लोकल' का नारा दिया है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक भारतीय स्वदेशी उत्पादों को खरीदने के साथ-साथ इन उत्पादों को अपने स्तर पर गर्व से प्रचारित भी करेगा। इससे भारतीय उत्पादों की विश्वसनीयता तथा लोकप्रियता दोनों में वृद्धि होने की संभावना है। वोकल फॉर लोकल की सार्थकता एवं उपयोगिता को सभी ने स्वीकारा है।

आज भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था में प्रमुख रूप से उभरा है। हमारा देश विश्व में सबसे अधिक युवा शक्ति संपन्न देश है। भारत को आत्मनिर्भर और आर्थिक महाशक्ति बनाने के उद्देश्य से सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं दूरदर्शिता वाला अभियान है। हमारी अर्थव्यवस्था बुनियादी ढांचा, प्रणाली, उत्साहशील आबादी और मांग हितधारकों को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा रही है।

केंद्र सरकार के स्किल इंडिया मिशन के अंतर्गत कौशल प्राप्त करने, नया कौशल सीखने और अपने अंदर मौजूद कौशल को और निखारने के लिए विशाल अवसंरचना का निर्माण हुआ और देश भर में चल रहे सैकड़ों प्रधानमंत्री कौशल केंद्रों ने पाँच वर्षों में पाँच करोड़ से अधिक युवाओं को कुशल बना दिया है जो कि एक संतोषजनक पहल है। प्रधानमंत्री कौशल विकास को गरीबी के खिलाफ जंग बताते हुए कहते हैं कि कौशल विकास का उद्देश्य केवल आर्थिक रूप से सक्षम बनना ही नहीं है बल्कि हर युवा में आत्म विश्वास पैदा करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। कौशल अर्जित करके न केवल रोजगार प्राप्त किया जा सकता है बल्कि यह स्वयं को जीवंत और ऊर्जावान महसूस करने का माध्यम भी है। 2015 में प्रारंभ हुआ यह सिलसिला लगभग आठ वर्षों से निरंतर जारी है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में

इस संबंध में प्रस्ताव पारित कर सदस्य देशों से प्रतिवर्ष 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल विकास दिवस मनाने का आह्वान किया था। उसी के अनुरूप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्र में अपने प्रथम कार्यकाल के दूसरे वर्ष में ही भारत में 15 जुलाई को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा कौशल विकास दिवस मनाए जाने की घोषणा की। प्रधानमंत्री की यही प्रमाणिकता उन्हें विश्व प्रसिद्ध नेता बनाती है। मोदी सरकार ने अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेतु उनके कौशल विकास की दिशा में सक्रिय कदम उठाने प्रारंभ कर दिये थे उसी का परिणाम है कि सरकार की कौशल विकास योजनाओं का लाभ लेकर अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए युवा वर्ग में रुचि बढ़ रही है। विश्व युवा कौशल विकास दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में कौशल को अनमोल खजाना निरूपित करते हुए प्रधानमंत्री ने इसे राष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में परिभाषित किया था जिसमें आत्मनिर्भर भारत का मजबूत आधार बनने की क्षमता है। प्रधानमंत्री ने कौशल को ऐसा उपहार बताया जो एक बेरोजगार स्वयं को रोजगार के रूप में दे सकता है। कौशल अर्जित करके न केवल रोजगार प्राप्त किया जा सकता है बल्कि यह स्वयं को जीवंत और ऊर्जावान महसूस करने का माध्यम भी है।

प्रधानमंत्री ने केंद्र सरकार के स्किल इंडिया मिशन को डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के सपने को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने भी युवाओं और कमजोर वर्गों के कौशल विकास पर विशेष जोर दिया था। युवाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य से उनके कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ योजनाओं के क्रियान्वयन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

कोरोना काल में अपने एक संदेश में संघ प्रमुख ने कहा था कि कोरोना संकट हमारे लिए स्वावलंबन का संदेश लेकर आया है। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले मानते हैं कि जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। आज भारत के युवाओं में यह आत्मविश्वास जागृत करने की आवश्यकता है कि वे कुछ भी कर सकते हैं। उनके अंदर दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत करने की सामर्थ्य मौजूद है। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद और स्वदेशी स्वावलंबन न्याय के एक वेबिनार में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने कहा था कि स्वदेशी का मतलब यह नहीं है कि हम दूसरे देशों के साथ संबंध नहीं रखें बल्कि यह है कि हम दूसरे देशों के साथ अपनी शर्तों पर व्यापार करें।

अभी हाल ही में हरियाणा में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 12 से 14 मार्च तक अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के दौरान यह सुविचारित अभिमत प्रकट किया गया कि विश्व कल्याण के उदात्त लक्ष्य को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु भारत के 'स्व' की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रही है। विदेशी आक्रमणों तथा संघर्ष के काल में भारतीय जनजीवन अस्त-व्यस्त हुआ तथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक व्यवस्थाओं को गहरी चोट पहुँची। इस कालखंड में पूज्य संतों व महापुरुषों के नेतृत्व में संपूर्ण समाज ने सतत संघर्षरत रहते हुए अपने 'स्व' को बचाए रखा। इस संग्राम की प्रेरणा स्वधर्म, स्वदेशी और स्वराज की 'स्व' त्रयी में निहित थी, जिसमें समस्त समाज की सहभागिता रही। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर सम्पूर्ण राष्ट्र ने इस संघर्ष में योगदान देने वाले जननायकों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा मनीषियों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर आर्थिक क्षेत्र में काम करने वाले संगठन स्वदेशी जागरण मंच ने स्वदेशी और स्वावलंबी भारत के समर्थन में इन दिनों डिजिटल हस्ताक्षर अभियान शुरू किया है। इस अभियान को स्वदेशी स्वावलंबन अभियान नाम दिया गया है। संगठन ने समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत अभियान की

सफलता के लिए कुल पाँच सूत्र दिए हैं।

स्वदेशी जागरण मंच ने पाँच सुझावों में अपील की है कि लोग सिर्फ स्थानीय और स्वदेशी उत्पाद ही खरीदें। बहुत मजबूरी में ही विदशी सामान खरीदें जब अन्य कोई ओर चारा बचा ना हो। मंच ने लोगों को उद्यमी और स्वरोजगारी बनने की सलाह दी है ताकि दूसरों को रोजगार देने में सफल हों। इससे हर गाँव और जिले को आत्मनिर्भर बनाने की बात कही गई है। अपने सुझाव के तौर पर स्वदेशी जागरण मंच ने गौ आधारित जैविक खेती पर बल दिया है। कहा है कि इससे किसानों की कमाई बढ़ेगी। लघु, कुटीर उद्योगों व स्टार्टअप को प्रोत्साहन मिलेगा। हमें जीडीपी वृद्धि के साथ-साथ रोजगार, पर्यावरण संतुलन और आम आदमी के कल्याण पर भी विचार करना होगा। आज देश में मैन्युफैक्चरिंग को पुनर्जीवित करने की जरूरत है, जिसके लिए समाज और सरकार को सम्मिलित प्रयास करने होंगे।

हाल ही में स्वावलंबी भारत अभियान की शुरुआत की गई है। भारत के पास कौशल विकास, नवाचार, अनुसंधान और विकास के माध्यम से एक ऐसा वातावरण बनाने की योजना जिसमें भारत के युवा अपनी क्षमता का उपयोग कर न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने में सक्षम हों। इस अभियान का लक्ष्य भारत के प्रत्येक नागरिक को गरीबी रेखा से ऊपर लाना, प्रत्येक हाथ को काम प्रदान करना और भारत को एक समृद्ध देश बनाना है, जहाँ देश के प्रत्येक नागरिक को आर्थिक विकास का लाभ मिले। इस अभियान हेतु व्यापक कार्य योजना बनाने के लिए यह निर्धारित किया गया है कि विभिन्न कार्यक्षेत्रों को गतिविधियों में विभाजित किया जाये और इनमें कौशल विकास और उद्यमिता, युवा जागरण, महिला सशक्तीकरण, डिजिटल और सोशल मीडिया, डिजिटल अभियान, विश्वविद्यालय रोजगार केंद्र, सरकारी नीतियाँ, अर्थशास्त्रियों और सामाजिक विचारकों के समूह, ग्राम सशक्तीकरण, कार्यक्रम क्रियान्वयन एवं कार्यशील अधोसंरचना विकसित करने के उद्देश्य से जिला स्तर पर समूह बनाये जाएंगे।

इसी अनुक्रम में मध्य प्रदेश ने 'एक जिला, एक उत्पाद' को स्थापित करने का प्रयास किया है। इक्कीसवीं सदी के भारत निर्माण में ग्लोबल स्किल गैप की मैपिंग की जा रही है जो युवाओं के कौशल और हुनर को संवारने का निरंतर प्रयास करेगा।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा भी मुख्यमंत्री युवा स्व-रोजगार योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना के द्वारा राज्य भर में बेरोजगारी की समस्या को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि युवा अपने पैरों पर खड़े हो सके। इस योजना के तहत राज्य सरकार 25 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। जिससे प्रदेश के बेरोजगार युवाओं को स्व-रोजगार के लिए वित्तीय सहायता मिल सके। युवा स्व-रोजगार योजना के अंतर्गत योग्य युवाओं को कम ब्याज दर पर लोन लेने सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। इस योजना के अंतर्गत राज्य के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को ही पात्र माना जायेगा। उत्तरप्रदेश युवा स्वरोजगार योजना 2022 के अंतर्गत जो भी युवा उद्योग क्षेत्र के लिए आवेदन करना चाहते हैं उन्हें 25 लाख रूपए तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी तथा जो सेवा क्षेत्र के तहत आवेदन करना चाहते हैं उन्हें 10 लाख रूपए तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जायेगी।

केवल इतना ही नहीं परियोजना लागत की कुल राशि की 25 मार्जिन मनी सब्सिडी भी राज्य सरकार द्वारा दी जायेगी। यदि अन्य राज्य भी इनकी तरह ही स्व को लेकर युवाओं को प्रेरित करें, स्वरोजगार की योजनाएँ लागू करें तो देश बहुत जल्द स्व को आत्मसात कर स्वावलंबी व आत्मनिर्भर बनकर विश्व में परम वैभव पर स्थापित होकर फिर से विश्वगुरू का स्थान प्राप्त कर सकेगा।

14 शिवदयाल पुरी, निकट आइटीआइ
यमुनानगर, हरियाणा - 135001
मो. 9416966424
umeshpvats@gmail-com

प्रशस्ति पत्र

-डॉ मीरा रामनिवास

'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' अर्थात भूमि मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूँ। वेदों के इस वचन को किशन सिंह ने अपने जीवन में सार्थक कर दिखाया। किसान परिवार से संबंध होने के नाते उनका बचपन खेत खलिहान में बीता। बचपन से ही अपने किसान पिता को धरती की गोद में श्रम करते हुए फसलें उगाते देखा। लहलहाती फसलों को देखा, सरसों, गेहूं, चना आदि फसलें जब खेतों में लहलहाती थीं उसका मन लुभाती थीं। वह स्कूल से सीधा खेत पर चला जाता। माता-पिता वहीं काम कर रहे होते वह खेत पर ही उनके साथ ही रोटी खाता और नीम के पेड़ के नीचे बैठकर होम वर्क कर लेता।

स्कूली पढ़ाई के बाद एग्रीकल्चर की पढ़ाई हेतु उसने कालेज जाने के लिए पिता को मना लिया। पिता ने उसका खेती-बाड़ी के प्रति प्रेम देखकर हाँ कर दी। वैसे भी उनके बाद ये काम उसे ही संभालना था।

एग्रीकल्चर की डिग्री हासिल कर पिता के साथ खेतीबाड़ी करना शुरु कर दिया। अपने गाँव की जमीन पर रवि, खरीफ फसलों के अलावा फूलों की खेती, फल व सब्जियाँ, मेथी, सौंफ, जीरा आदि मसाले उगाने की प्रेरणा का श्रेय श्री किशन सिंह को जाता है।

किशनसिंह की पत्नी भी किसान परिवार से थी। पत्नी ने आते ही उनके साथ कदम से कदम मिलाकर खेतीबाड़ी का काम शुरू कर दिया। उनका अपना एक बेटा था। लेकिन वह बिल्कुल उनके विपरीत था। बेटे को कृषि कार्य में कतई रुचि नहीं थी। बेटा पढ़ लिखकर शहर का हो गया और वे अकेले ही अपनी खेती संभालते रहे। पत्नी के चले जाने के बाद थोड़ी कठिनाई आई किंतु धीरे-धीरे अपने को व खेती क्यारी को भली-भांति सँभाल लिया। गाँव वाले उनकी मेहनत और लगन पर नाज करते।

वानप्रस्थ आश्रम में पहुँच कर भी उनका माटी प्रेम कम नहीं हुआ। तबियत नरम-गरम होती तो बेटा उन्हें शहर लिवा ले जाता और वे ठीक होते ही वापस गाँव चले आते। उनकी भूमि उन्हें वापस गाँव खींच लाती। वे माटी में श्रम किए बिना रह नहीं सकते थे।

गाँव वाले अब उन्हें शहर जाकर बेटे के साथ जाकर रहने की सलाह देने लगे। एक दिन लाख आनाकानी के बावजूद बेटा उन्हें शहर लिवा लाया। किशनसिंह आदत से मजबूर थे। जब तक धरती माँ की गोद में दो चार घंटे खुरपी न चला लेते उन्हें चैन नहीं पड़ता था। सबसे पहले उन्होंने बेटे के धर के आँगन में कुंडे (गमले) लाकर रखे और उनमें तरह-तरह के फूलों पत्तों के पौधे लगा दिए। घर आँगन हरा-भरा कर दिया। इसपर भी उन्हें चैन न मिला तो कालोनी के अंदर और आस-पास खाली पड़ी जमीन पर पेड़ पौधे लगा दिये। कालोनी में रहने वाले सदस्यों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एक शाम बेटे के साथ पार्क में घूमने गये। पार्क की दशा देख उन्हें बहुत कष्ट हुआ। पेड़-पोधे मुरझाए हुए थे। उनका माटी प्रेम जाग उठा। उन्होंने अपने श्रम से पार्क को खूबसूरत बनाने की ठान ली। बेटे को अपना अभिमत बताया। बेटे ने भी सोचा कि इसी बहाने से पिताजी का मन शहर में लगा रहेगा यह अच्छा ही है। उन्हें खुशी मिलती है तो भले ही

अपनी सेवाएँ दें।

अब किशनसिंह रोज पार्क में श्रमदान करने लगे। वे खुश थे कि उनके समय का सदुपयोग हो रहा था। बगीचे को अपने खेत की तरह अपना समझ घास-फूस निकाल कर उन्होंने क्यारियाँ बनाई और फूलों के बीज लगा दिये। सूखे पेड़ पौधों की जगह नये पेड़ पौधे लगा दिये। कुछ ही दिनों में पार्क की सूरत ही बदल गई। यह देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई। देखते ही देखते पार्क रंग बिरंगे फूलों से सुशोभित हो गया। पार्क में आने-जाने वालों ने इस फर्क को महसूस किया।

ऐसे में एक दिन जिलाधीश ने शहर के सभी पार्कों का सालाना दौरा किया तो इस पार्क की हरियाली और रख -रखाव को देख वे बहुत खुश हुए। उन्होंने पार्क के माली को शाबाशी देने के लिए दफ्तर बुला भेजा तब पार्क के सुपरवाइजर अधिकारी ने उन्हें बताया,

''श्रीमान! पार्क के माली की जगह कई महीने से खाली पड़ी है। जिस माली को जिम्मेदारी सौंपी थी वह भी कई महीनों से छुट्टी पर चल रहा है। मैं खुद अचंभित हूँ कि आखिर कौन है यह शख्स, जो पार्क में अपनी सेवाएँ दे रहा है।'' जिलाधीश भी उत्तर सुन कर अवाक रह गये।

अब वे सुबह पार्क में टहलने गए तो उन्होंने किशनसिंह को पार्क में काम करते हुए देखा। उन्होंने नजदीक जाकर पूछा "

''भाई! क्या आप यहाँ के माली हैं?'' नहीं भाई साहब मैं यहाँ का माली नहीं हूँ। मैं तो एक किसान हूँ। बेटे के साथ पास ही की कालोनी में रहता हूँ। एक शाम बेटे के साथ पार्क घूमने आया था। पार्क की हालत खराब थी। मैं कई दिन आया कोई माली दिखाई नहीं दिया। मुझसे इस पार्क की दुर्दशा देखी नहीं गई तो मैं अपनी सेवाएँ देने चला आता हूँ। इन पेड़-पौधों को हरा-भरा देखने से मुझे बेहद खुशी मिलती है और मेरा मन प्रसन्न होता है।

धन्य हैं आप और आपका जज़्बा। जिलाधीश ने अपना परिचय दिया। गाड़ी में बैठाया और कहा,

''चलिए मुझे आपके बेटे से मिलना है।'' किशनसिंह को कुछ समझ नहीं आ रहा था फिर भी वे गाड़ी में बैठ गए।

जिलाधीश की गाड़ी आज कालोनी में खड़ी देख लोग चकित थे।

उनके घर जाकर जिलाधीश ने उनके बेटे से कुछ बातचीत की और उसे कलक्टर कचहरी आने का कहकर चले गए।

इस बार के गणतंत्र दिवस पर किशनसिंह को बिना किसी पारिश्रमिक पार्क में श्रमदान देने के लिए 'श्रेष्ठ वरिष्ठ नागरिक' का प्रशस्ति पत्र दिया गया। अपने भाषण में जिलाधीश ने कहा ''आज भारत को किशनसिंह जैसे नागरिकों की जरूरत है। मैं उनके माटी प्रेम और श्रमशीलता को दिल से नमन करता हूँ। हर नागरिक के दिल में देश प्रेम होना जरुरी है। देश की सुंदरता को बढ़ाना देश की संपत्ति की रक्षा करना हर नागरिक का परम कर्तव्य है। आइए, आज हम सब मिलकर इस माटी की सुध लेने का प्रण लें।''

जोर-जोर से तालियों की आवाज़ वातावरण को सुखद बना रही थी। किशनसिंह के बेटे का पूरा परिवार ही आज स्वयं को गर्वित महसूस कर रहा था।

गांधीनगर गुजरात

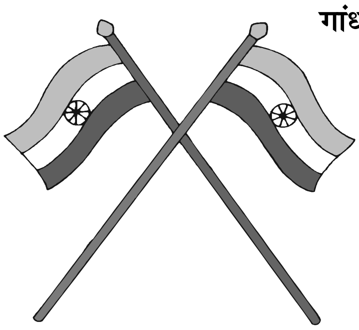

ये मील के पत्थर –अंजना छलोत्रे

श्रीमती सुरतवंती वर्मा का जन्म 2 अक्टूबर 1916 को कानपुर में वेटेनरी डॉक्टर के घर प्रथम संतान के रूप में हुआ था। उनसे छोटे 8 भाई बहन थे। अपनी खूबसूरती और तेजस्वी व्यक्तित्व के कारण वे सबके बीच चर्चा का विषय रहीं। उनका विवाह बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त एवं पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के मार्गदर्शन में पीएचडी कर रहे श्री गणेश प्रसाद वर्मा से हुआ। गणेश प्रसाद वर्मा बहुत ही विद्वान थे। उन्होंने दर्शन शास्त्र पर लिखी अपनी किताब 'सरस्वती पूजन द्वारा विश्व शांति' से काफी प्रसिद्धि पाई थी। हालांकि उन्होंने पढ़ाई एक दिशा में नहीं की और वे फिर सिविल सर्विसेज में भी गए।

विवाह के पश्चात सुरतवंती अपने ससुराल माचीवाड़ा (मध्यप्रदेश)आ गईं जहाँ उनके ससुर जेलर थे। उनकी सास बहुत अधिक सुंदर थीं। नाजुक नयन नक्श वाली वे रजवाड़ों से आई थीं इसलिए गृह कार्य में दक्ष नहीं थी। लेकिन सुरतवंती अलग ही स्वभाव की थीं। अपनी सभी घरेलू जिम्मेदारियों को निभाते हुए न केवल साहित्य में

रुचि रखती थीं बल्कि थोड़ा बहुत लिखती भी थीं। गीत आदि में उनकी रुचि थी, वे घरेलू कार्य करते हुए लोकगीत गाती भी रहती थीं।

उनकी सबसे बड़ी ननद का विवाह जमींदार घराने में हुआ। जब विवाह हुआ तो वह बहुत छोटी सी थीं। इतनी छोटी उम्र में विवाह, वह भी दुगनी उम्र के जमींदार के बिगड़ैल बेटे से? जो रास रंग में व्यस्त रहता था। जब यह सारे किस्से ननद ने आकर सुनाए तो वे चिंता ग्रस्त हो गईं। दूसरी स्त्रियों से संबंध... ननद का अपढ़ होना.... घर में छुआछूत का वातावरण...उन्होंने संकल्प लिया कि वे ता उम्र महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाएंगी। पति गणेश प्रसाद वर्मा मध्यप्रदेश के मंडला जिले में जिला मजिस्ट्रेट होकर गए। अपने छोटे-छोटे बच्चों को सँभालते हुए सुरतवंती समाज सेवा के क्षेत्र में आ गईं। उनके सामने अनेक प्रश्न थे, जिन्हें सुलझाने में उनके पति ने उनका साथ दिया।

इसी समय स्वतंत्रता आंदोलन ने गति पकड़ी। दोनों ही पति पत्नी जबलपुर में झंडा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने लगे। इस आंदोलन में दोनों पति-पत्नी सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ मिलकर सक्रिय हुए। वे स्वयं जबलपुर के सत्याग्रहियों में शामिल होकर सत्याग्रह करने निकलीं। अन्य सब तो गिरफ्तार कर लिए गए पर सुरतवंती सहित कुछ कार्यकर्ता रह गए। वे सब जेल के बाहर बैठे रहे कि हमें भी गिरफ्तार करो, पर जेल भर चुके थे; जगह ही नहीं बची थी। जेल में वे सुभद्रा जी से मिलने जाती रहीं। यह सान्निध्य दोस्ती में बदल गया।

देश की आजादी के साथ ही गाँधी जी की हत्या कर दी गई। उस दिन सुरतवंती ऐसी रोई थीं जैसे उनका कोई अपना ही संसार छोड़ चला गया हो। गाँधी जी की अस्थियाँ देश की हर नदी में विसर्जित की जानी थी। जबलपुर में नर्मदा नदी के तिलवारा घाट में अस्थियाँ विसर्जित करने सुभद्रा

जी के नेतृत्व में महिलाओं का विशाल समूह रघुपति राघव राजा राम गाता हुआ पैदल वहाँ तक गया था जिसमें वे भी शामिल थीं। अनेक बाधाओं को पार कर समूह तिलवारा घाट पहुँचा और अस्थि विसर्जन में सम्मिलित हुआ।

सुरतवंती ने नगरपालिका का चुनाव भी जीता था और वे शहर की मेयर भी चुनी गईं। एक वर्ष मेयर पद पर रहने के पश्चात वे शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर चुनी गईं। वे प्रायमरी और माध्यमिक पाठशालाओं में अचानक पहुँच जाती इंस्पेक्शन के लिए। उनके कार्यकाल तक पाठ शालाओं में विद्यार्थियों के लिए बहुत सारे कार्य हुए।

जबलपुर में सांप्रदायिक दंगों की वजह बने उषा भार्गव कांड की पूरी रिपोर्ट लेकर वे नेहरू जी के पास गईं और मुख्यमंत्री (मध्यप्रदेश) द्वारका प्रसाद मिश्र के साथ मिलकर इस काण्ड को परिणाम तक पहुँचाने में खासी मदद की। सुरतवंती ने कांग्रेस द्वारा स्थापित भारत सेवक समाज ज्वाइन कर लिया था और वे उसकी कर्मठ सदस्य थीं। वे मध्य प्रदेश के गाँवों में जाती थीं और 8 या 10 दिवसीय कैंप आयोजित करती थीं इन में गाँवों के विकास और ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष कार्य आयोजित होते थे। कैंपों में ओपन फायरिंग भी सिखाई जाती जिसमें वे बड़ी दिलेरी से भाग लेती थीं।

जबलपुर की मशहूर समाज सेविका श्रीमती सुरतवंती वर्मा सुरतवंती ने हमेशा विदेशी रहन-सहन की वस्तुओं का बहिष्कार किया और सारी जिंदगी खादी की सफेद साड़ी पहनी जिसकी किनारी और पल्लू रंगीन होता था। कभी कोई जेवर नहीं पहना सिवाय बिछुए और कांच की चूड़ियों के। माथे पर की उनकी सिंदूर की लाल बिंदी उनके व्यक्तित्व की पहचान थी।

कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वे कभी विचलित नहीं हुईं। उनकी प्रिय सखी सुभद्रा कुमारी चौहान का नागपुर से जबलपुर लौटते हुए कार दुर्घटना में निधन हो गया तो उन्होंने इस मित्रता को निभाया और उनके शुरू किए समाजसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाया।

बेटियों को वे भाग्य मानती थीं। उन्होंने अपने घर में लड़के-लड़की में कभी कोई भेदभाव नहीं रखा। वह महिला अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। उस समय भी ऐसी बहुत स्वयंसेवी संस्थाएँ थीं जो महिलाओं के लिए कार्य कर रही थीं लेकिन आदिवासी महिलाओं के लिए कोई संस्था आगे नहीं आई। सुरतवंती ने आदिवासी महिलाओं के लिए महिला संगठन की शुरुआत कर विभिन्न उद्देश्यों पर काम करना शुरू किया। महिलाओं को साक्षर बनाना, बेसिक शिक्षा देना, उनके कानूनी एवं सामाजिक अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक करना जैसे उद्देश्यों को लेकर वे आगे बढ़ीं। मध्यप्रदेश के अंचल में बसे गोंड़, बैगा, भील आदिवासियों के कबीलों में स्त्रियों की स्थिति पर जानकारी हासिल कर उन्होंने पाया कि आदिवासी महिलाएँ भी पितृसत्ता में जकड़ी हैं और उन का कोई खास महत्व नहीं है। जबकि वे खेती के तमाम कामों यथा गुड़ाई, कटाई, मंडाई, शहरों के साप्ताहिक हाट बाजार में जाकर बेचना, झोपड़े बनाना आदि कामों में पुरुषों के साथ बराबर की भागीदार थीं फिर भी उन्हें समानता स्वायत्तता और संसाधनों में अधिकार नहीं मिलता था। इसके अलावा हाट बाजार में उन्हें मात्र इस अपराध पर नीलामी पर चढ़ा दिया जाता था कि उन्होंने अपनी मर्जी से शादी की है। उन्हें खेतों की मेड़ों पर निर्वस्त्र घुमाया जाता। क्योंकि उस साल सूखा पड़ा है और इंद्र भगवान इसी से तो प्रसन्न होंगे। उन्हें डायन, बिसाही जैसे शब्दों से नवाजा जाता और पत्थर, लोहे की छड़ों से पीट-पीटकर उनकी हत्या कर दी जाती। ऐसी तमाम घटनाओं की मूक गवाह वे उतर पड़ीं आदिवासी समाज में। उन्होंने संगठन की सदस्यों को लेकर सतपुड़ा की तराई और राई घाटी में बसे आदिवासी बहुल इलाकों का तूफानी दौरा किया और कड़े परिश्रम एवं कानूनी दांवपेच से उन्हें उनके अधिकार दिलाए। लोगों ने दाँतों तले उंगली दबा ली जब उन्होंने देखा कि कुछ दबंग आदिवासी औरतें सुरतवंती के संगठन से आ जुड़ी हैं और वे संगठन की सदस्य भी हैं। धीरे-धीरे आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति मजबूत होती गई। उन्हें बहुत हद तक डायन की त्रासदी से छुटकारा मिला क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि डायन कहकर उन्हें नीचा दिखाने वालों की मंशा उनकी संपत्ति हड़पना, बलात्कार और यौन शोषण ही सिद्ध करती है। उनके संगठन में दूर-दूर से आदिवासी स्त्रियाँ अपनी फरियाद लेकर आती थीं।

सुरतवंती ने अपनी बेटियों को उच्च शिक्षित बनाया। उनकी बड़ी बेटी श्रीमती शीला पंड्या ने गवर्नमेंट रिकॉग्नाइज होम साइंस की कार्यशाला चलाई जहाँ वे

विविध व्यंजन बनाने की ऐसी शिक्षा देती थीं कि स्त्री अपना व्यवसाय शुरू कर सकती थी। सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, गुड़िया बनाना आदि व्यापारिक स्तर पर सिखाया जाता था। उनकी दो छोटी बेटियों श्रीमती संतोष श्रीवास्तव एवं डॉ प्रमिला वर्मा ने साहित्य के क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल किया। ये दोनों बेटियाँ भी समाज सेवा में अपना योगदान लगातार दे रही हैं। सुरतवंती वर्मा का निधन 18 अप्रैल 1999 को बिना किसी बीमारी के हृदयगति रुक जाने से आगरा में हुआ।

राजनीति और समाजसेवा में कर्मठता से भूमिका निभाने के बावजूद उन्होंने कभी घर की उपेक्षा नहीं की और न ही बच्चों के लालन-पालन में कोई कसर छोड़ी।

उनके बड़े पुत्र विजय वर्मा मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर के ख्याति प्राप्त नाट्यकर्मी थे। वे पत्रकार भी थे। साहित्य के क्षेत्र में भी उनका अमूल्य योगदान था। उनके ही नाम से राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार विजय वर्मा कथा सम्मान पिछले 20 वर्षों से दिया जाता रहा है। उनके छोटे बेटे रमेश चंद्र एक महत्वपूर्ण समाजसेवी रहे, जिन्होंने बंद हो जाने वाले कारखानों में कार्यरत लोगों के हित के लिए हाईकोर्ट में केस लड़े और सबको उनका वेतन दिलवाया। नागपुर में जहाँ वह रहते थे उस रोड का नाम उनके नाम से है। इन दोनों की असमय ही कम उम्र में मृत्यु हो गई। सुरतवंती वर्मा जैसी स्वयं योग्य एवं कर्मठ व्यक्तित्व की थीं, वैसे ही उनकी संताने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अग्रणी रहीं।

जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8,
एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

भारत देश महान

-पूजल दशरथ विजयवर्गीय

उठो देश के नौजवानों,
अपनी-अपनी कमान संभालो।
तुम ही पुरुषार्थी हो,
तुम ही हो बलवान,
तुमसे ही बनता है,
भारत देश महान।

आलस को त्याग कर,
अपने सपने को तुम्हें साकार करना है।
नशे की नींद से जाग कर,
अपने देश को तुम्हें जगमग करना है।।

होता नहीं कोई कार्य छोटा,
सभी से देश को गति मिलती हैं।
एक कार्य के बिना दूजा अधूरा,
उसे सार्थक करने से ही देश को प्रगति मिलती है।।

है सीख बहुत सी,
स्वामी विवेकानंद जी ने जो सिखलाए।
युवाओं के आदर्श बनकर,
सफलता के पाठ पढ़ाए।।

रखो बुलंद आवाज को,
गलत न सहने पाए,
सच्चा की लड़ाई में,
सब एकजुट हो जाए।।

हो एक न पीढ़ी तुम,
अपनी सोच को जग जाहिर कर दो।
जब बात आए देश की तो,
अपना सबकुछ देश पर न्योछावर कर दो।।

राजसमंद, राजस्थान।

कश्मीर की सात दिवसीय अध्ययन यात्रा

– मनु भारती

धारा 370 समाप्त कर दिये जाने के बाद विश्व बिरादरी के समक्ष कश्मीर में ज्यादती, अत्याचार, भेदभाव का आरोप लगाकर भारत को विश्वभर में बदनाम करने का षड्यंत्र चलाया गया। इसी षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए 'इंडियन मीडिया सेंटर' की ओर से हरियाणा भर से कुछ चयनित विद्यार्थियों को कश्मीर अध्ययन यात्रा पर भेजा गया। इस दल में मुझे भी कश्मीर जाकर वहाँ के स्थानीय लोगों से मिलकर कश्मीर के माहौल पर सच जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

हम होली के पावन अवसर पर यमुनानगर में हरियाणा के शिक्षा मंत्री चौ. कंवरपाल जी के घर आइएमसी के स्टेट सैकेरेट्री नरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में इक्ट्ठा हुये। मंत्री जी ने हम सभी सदस्यों के साथ होली खेलकर हमें कश्मीर के लिए विदा किया। यहाँ से हम चंडीगढ़ विधानसभा में पहुँचे, जहाँ स्पीकर साहब श्री ज्ञानचंद गुप्ता की शुभकामनाएँ लेकर हम जम्मू के लिए रवाना हुए। जम्मू में बीएसएफ फ्रंटियर बेस कैंप में एसपी भावना मैडम ने हमारा स्वागत किया। सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए अगले सात दिनों के लिए यहाँ से हम बीएसएफ की कस्टडी में हो गए थे। स्नानादि से निवृत्त होकर नाश्ता कर हम मानसर लेक गये जहाँ हमने स्थानीय लोगों से कश्मीर पर चर्चा की। सभी ने विकास कार्यों के लिए बहुत प्रशंसा की। करते भी क्यों न क्योंकि जम्मू के लोग तो सदा से ही 370 हटाने के पक्ष में रहे थे, असली समस्या तो घाटी के लोगों की है, जहाँ हमें नई जानकारियाँ मिलने की उम्मीद थी। अगले दिन हम दंगा पीड़ित कश्मीरी पंडितों को आबंटित जगती कॉलोनी में गये तथा दंगा भोगी परिवारों से मिले। इसी कॉलोनी में स्थित सेवाभारती द्वारा संचालित केंद्र के अन्तर्गत दीर्घा गैलरी में हमने ऐसे चित्रपट्ट व आलेख देखे जो कश्मीरी पंडितों पर हुये अत्याचारों को चीख-चीखकर बयान कर रहे थे। चित्र गैलरी में पंडितों की अत्याचार दिखाती हिस्ट्री देख हम बहुत भावुक हो गए। कॉलोनी के लोग अभी भी सुविधाओं के अभाव में जी रहे थे। कॉलोनी के ही एक अस्सी वर्ष के बुजुर्ग ने आपबीती बताते हुए कहा कि हमारे पास कश्मीर में तीन-तीन कोठियाँ थीं। एक कोठी में 9-10 कमरे होते थे और यहाँ हम एक ही कमरे में 9-10 सदस्य रहते हैं। पीने को साफ पानी, खाने को पर्याप्त राशन कुछ भी ठीक से नहीं मिलता। बुजुर्गों सहित पुराने लोग विशेष रूप से महिलाएँ सभी अपने परिवार के खो चुके सदस्यों व अपनी भरी-पूरी छुट गई संपत्ति को अभी भी बहुत याद करके रोने लगते हैं। बुजुर्गों की इच्छा है कि वह मोदी जी से मिलकर अपनी सारी समस्या बतायें। अगले दिन हम एसपी भावना मैडम के साथ राजा हरिसिंह म्यूजियम देखने गये जो कश्मीर रियासत के सभी राजाओं के चित्रों के माध्यम से कश्मीर की गर्व

गाथा बयान कर रहा था। फिर सभी सदस्य शहीद स्तंभ देखने गये। शहीद स्तंभ पर वीर, महावीर, परमवीर चक्र विजेता एवं अन्य बहादुर सैनिकों के नाम पढ़कर हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो गया। यहाँ हमने शहीदों के सम्मान में दो मिनट तक मौन व्रत धारण किया। तब यहाँ से हम बीओपी फर्स्ट डिफेंसलाइन सुजात गढ़ गये जहाँ इंडो-पाक बॉर्डर पर लंबे-चौड़े कद के अपने बाँके जवानों की एक्टिविटी देखकर हम बहुत आनन्दित हुए। हमें हरियाणा से आए हुए अतिथि मानकर बीएसएफ अधिकारियों द्वारा हमारा विशेष अभिवादन हुआ। बॉर्डर पर सैनिकों के बीच बिताये पलों से हमें गर्व की अनुभूति हो रही थी। यहाँ हमने तिरंगा हाथ में लेकर सैनिकों के साथ खूब डांस किया। यहाँ भी हमने लोगों से बात की किंतु यहाँ अधिकतर लोग

बाहर से आए हुए थे, अत: उन्होंने तो 370 हटने पर सकारात्मक पक्ष ही रखा।

अगले दिन सुबह 5 बजे ही हम सभी सदस्य श्री नगर के लिए चले। बस के आगे-आगे सेक्योरिटी के लिए पायलट गाड़ी चल रही थी, बस में भी 3-4 जवान फुल सिक्योरिटी हेतु तैनात थे। हम निश्चिंत होकर बस में नाच-गाना करते हुए मौज-मस्ती के साथ आनन्द ले रहे थे। 12 घंटे के लंबे सफर के बाद हम कश्मीर की बहुचर्चित डल झील के किनारे-किनारे चलते हुए सांय काल ज्येष्ठा माता मंदिर पहुँचे। मंदिर परिसर की शांति व सुंदरता बहुत ही अद्‌भुत थी, लेकिन यहाँ आकर लगता है कि बस! यहीं के होकर रह जाओ। यह ऐतिहासिक मंदिर लगभग 3000 साल पुराना है और कश्मीर घाटी में हिंदू संस्कृति का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतीक है। कहते हैं कि औरंगजेब के सैनिक जब मंदिर ध्वस्त कर रहे थे तो यहाँ के पुजारी ने माता पार्वती की प्रतिमा को स्थित कुंड में छिपा दिया था। बाकी सभी मूर्तियाँ मुगलों ने खंडित कर दी थीं बस! पार्वती की ही मूर्ति सही-सलामत रही। फिर अगले दिन डल झील और निशात बाग गये। डल झील में शिकारे का आन्नद लिया। फिर हम मुगल बाग गए जो कि बहुत ही आकर्षक, बहुत सुंदर मन को मोह लेने वाला था। यहाँ सुंदर-सुंदर, भांति-भांति के फूल सभी को लुभा रहे थे। यहाँ भी हमने स्थानीय लोगों से बातचीत की तो मिलाजुलाअसर देखने को मिला।

अगले दिन हम हजरतबल दरगाह गए वहाँ हमने मुसलमानों से बातचीत की, चर्चा के आधार पर अधिकतर मुसलमान 370 हटने के बाद निर्मित माहौल से संतुष्ट मिले। तब हमने यहीं हिंदू-मुस्लिम दुकानदारों से भी बात की जो कह रहे थे कि अब सब ठीक है खुशहाल है कोई चिंता नहीं है ना आतंकियों का कोई भय है सब साथ-साथ काम करते हैं। शाम को हम श्रीनगर से 25 किलोमीटर दूर गान्दरबल ज़िले में तुलमुल गाँव में एक पवित्र पानी के चश्मे के ऊपर स्थित 'खीर भवानी मंदिर' पहुँचे। मेरे दादा जी व पिताजी खीर भवानी मंदिर की दिव्यता और इसके इतिहास के बारें में कई बार बता चुके थे। दादा जी तो यहाँ कई बार आए थे क्योंकि वे आर्मी ड्यूटी पर कश्मीर में काफी समय तक रहे, बाद में लद्दाख से रिटायर हुए। खीर भवानी मंदिर में खीर का ही प्रसाद चढ़ता है और खीर का प्रसाद ही मिलता है। इसे राज्ञा देवी मंदिर भी कहा

जाता है जो कि सीता हरण से दुखी होकर रावण की लंका से यहाँ तुलमुल गाँव में आई। यह भवानी देवी का एक प्रसिद्ध मंदिर है। खीर भवानी देवी की पूजा लगभग सभी कश्मीरी हिन्दू करते हैं। यहाँ हमें ग्रीन रवोलूशन के सामाजिक कार्यकर्ता मिले जो कश्मीर में चिनार के पेड़ लगाकर कश्मीर को हराभरा रखने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने हमें प्रकृति के प्रति बहुत प्रोत्साहित किया।

अगले दिन हम राजबाग में झेलम नदी के ऊपर बने हुए जीरोलाइन बृज पर गये। यहाँ के नजारे देखने के बाद हमने कुछ विद्यार्थियों से कश्मीर के बारे में बात की। अधिकतर मुस्लिम विद्यार्थियों ने कहा कि पूरे क्षेत्र में विकास कार्य हो रहे हैं किंतु बाकी राज्यों की तरह तेज गति से नहीं हो रहे। एक विद्यार्थी ने बताया कि हमारे लिए जॉब्स कम है जिस कारण युवा लड़के मानते हैं कि पढ़ाई करके क्या फायदा? जॉब्स तो मिल नहीं रही, इससे अधिकतर युवा ड्रग्स की ओर जा रहे हैं। इनके अनुसार कश्मीर लड़कों से भी अधिक लड़कियों के लिए सुरक्षित है। यहाँ लड़कियाँ कोई भी काम करें, कहीं भी पढ़ने जायें वे दिल्ली की तरह असुरक्षित नहीं है। फिर हम 15 कोर हैड क्वार्टर में गये जहाँ हमने 200 वर्ष पुराना इबादत ए शहादत (बादामी बाग आर्मी केंटोनमेंट म्यूजियम) देखा। इस म्युजियम में उस समय की रियासतों में प्रयुक्त होने वाले सैन्य हथियार देखे। फिर पानी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध शिव का एतिहासिक मंदिर देखा।

अगले दिन हम सैफरन होटल गये, जहाँ हमें एक अलग व्यक्तित्व के मालिक एमएन खान मिले। उन्होंने बताया कि 1990 से पहले वे सरकार को 370 धारा हटाने के लिए लगातार पत्र लिखते थे। यह कश्मीर के पहले व्यक्ति थे जो धारा 370 को हटवाने के लिए सरकार को बिन माँगे निरंतर सुझाव प्रेषित कर रहे थे। यह कश्मीर पर मोदी सरकार द्वारा लिये गये निर्णय, कार्य एवं नीति से पूर्णतः संतुष्ट दिखाई पड़ते थे।

ज्येष्ठा माता मंदिर में ही हमें एक स्वयंसेवी संस्था से जुड़े राजा मुनीब सर मिले, जिन्होंने पाक अधिकृत कश्मीर के बारे में विस्तार से बताया। फिर हम 'डाचीगढ़ गाँव' गये जहाँ जम्मू-कश्मीर मानवाधिकार चेयरपर्सन महजबीन नबी मिलीं। नबी मैडम ने बताया कि अब कश्मीर बदल रहा है। यहाँ महिलाएँ बहुत आगे हैं तथा अच्छी पोस्टों पर हैं। फिर हम श्रीनगर में ही डांस चैम्पियनशिप देखने के लिए टैगोर हॉल गये। यहाँ भी हमने विद्यार्थियों से कश्मीर के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। शाम को हम बेरीनाग गये। बेरीनाग भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के अनन्तनाग ज़िले में स्थित एक नगर है। बेरीनाग एक प्रसिद्ध पानी का चश्मा और पर्यटक स्थल है। बेरीनाग का जल झेलम नदी का एक स्रोत है अर्थात् इसे झेलम नदी का उद्‌गम स्थल माना जाता है जो बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहक है। कहते हैं कि यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह कश्मीर में है। अतः सात दिनों तक इस स्वर्ग से सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों को निहारते हुए हम कश्मीर की आबोहवा का अनुमान लगाते रहे और अंत में इस निर्णय पर पहुँचे कि चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम या कोई महिला हो या पुरुष, सभी धारा 370 के हटने से या तो खुश हैं या फिर कुछ को हटने या रहने से कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता किंतु ऐसा कहने वाला एक भी नहीं मिला कि 370 हटने से पहले कश्मीर के लोग खुश थे और हटने के बाद दुखी हैं। इस निष्कर्ष के साथ हमने वापसी के लिए चंडीगढ़ की बस ली और आ गये अपने घर।

(लेखिका एमएससी फिजिक्स अंतिम वर्ष की छात्रा है)

भवन क्रमांक 14, शिवदयाल पुरी
निकट रामकृष्ण परमहंस स्कूल,
आई. टी. आई. यमुनानगर
मो. 8607168424

दो गीत

-टीकम चन्दर ढोडरिया

गाँव था कैसा बैठ पास मैं, तुझे बताऊँ हाल।।
मोटा खाया पहना मोटा, फिर भी थे खुशहाल।।

भोर हुये ही धेनु रँभाती
पक्षी करते गान,
गले पड़ी बेलों के घण्टी
छेड़े मधुरिम तान
भाभी चक्की आटा पीसे
दादी करती जाप
लिये ठेपला अम्मा जाती
उपले देती थाप
नयी बहुरिया पनघट जाती, मुख पर घूँघट डाल।।

भाई जी खेतों पर जाते
काका दुहते गाय
लिये कलेवा काका आती
सिर पर छाक जमाय
छड़ी लिये दादा जी बैठे
दरवाजे के पास
नेह डोर से बँधा हुआ था
घर भर का विश्वास
इक चूल्हे पर बनती थी तब, सबकी रोटी दाल।।

चौपालों पर बैठे करते
सुख-दुख की सब बात
तारों सँग चलता चंदा भी
ले अपनी बारात
दादी नानी हमें सुनाती
रोज कहानी रात
पता नहीं कब सब सो जाते
कब होता परभात
गाँव था कैसा बैठ पास मैं, तुझे बताऊँ हाल।।

पृथक हुई थी राहें अपनी
उसी मोड़ पर प्रिये खड़ा हूँ।
आओगी तुम लौट यहाँ पर
इसी आस में प्रिये खड़ा हूँ।।

माना आते नहीं विगत दिन
खिले फूल हैं मुरझाते,
बँधे सभी हैं काल-चक्र में
नियम सृष्टि का समझाते।
स्मृतियों की प्रबल चेतना
उर की साँकल को खोले
सुप्त-स्वप्न जब लें अँगड़ा
तन-मन में मदिरा घोले
आ जाना तुम साँझ ढले भी
नेह-दीप मैं लिये खड़ा हूँ।।

गालों के गह्वर मिट जायें
कुन्तल श्याम धवल जब हों
रूप समेटे अपनी चादर
काया सुभग शिथिल जब हो
आना प्रथम मिलन सी प्रिय तुम
अधरों पर मुस्कान लिये
वय की सीमा से विमुक्त हो
अल्हड़ पन का मान लिये
अभिनंदन में वही कुँआरी
मधुर-गंध मैं लिये खड़ा हूँ।।

आओ गी तुम लौट यहाँ पर
इसी आस में प्रिये खड़ा हूँ।।

छबड़ा जिला बारां राजस्थान।325220

नदी अंतर्मन की

राजेश्वरी जोशी पंत

बाहर की दुनिया से दूर
नदी एक मन में बहती है
क्या कहती है नदी? उसे मैं
सुनने की कोशिश करती हूँ

बैठी उसके किनारे पर मैं
अक्सर सोचा करती हूँ
कस्तूरी मृग-सी क्या खोज रही हूँ?
क्यों जंगल-जंगल भटकी हूँ??

जंगल में नहीं वो कस्तूरी
मेरे अंदर ही तो बसती है
सुख की नदिया प्रबल वेग से
मेरे अन्तर में ही तो बहती है

कल-कल करते इसके स्वरों की
मीठी ध्वनि में खो जाती हूँ
खुश होकर फिर मन को अपने
शीतल चाँदनी-सा पाती हूँ।

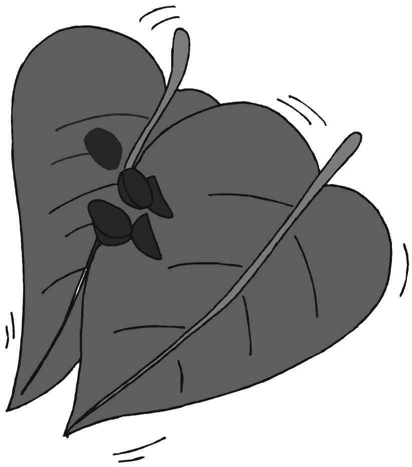

S

ग्रीन वर्ल्ड स्कूल, शक्ति फार्म,
सितारगंज, जिला ऊधमसिंह नगर,
(उत्तराखण्ड) मो. - 8433019966

ख़ामोश आँखों में

स्नेह लता नेगी

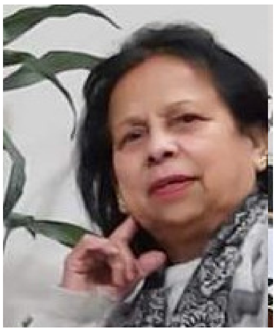

आसमान पर चमकते
माहताब के दीदार को
हर शख्स बेताब है
दिल में इक हसीन आस
और ख्वाब लिए आँखों में
इस हकीकत की
पथरीली दुनिया में

ऐतबार करना गुनाह हुआ
बन आई है जान पर

ख़ामोश आँखों में
जो गहरा है
लगता है
जैसे उस में सारी खुदाई है
माना कि यह
इक ख्वाब है
फिर भी बहुत चाहत है
नज़्मों में सुलगते
तसव्वुर का तराना और
होठों पर अफ़साना है ।

S

लिप्पा हाउस, पैट्रोल पम्प,
विकास नगर, शिमला (हि.प्र.)

ऐ खुशी सुन!

-उदयवीर भारद्वाज

ऐ खुशी सुन!
यूं ही पड़ी रहती तू
न तुझे कोई पूछता
अगर यह गम न होता
कैसे जीते हैं लोग
सीने में दर्द लिए

तुझे इसका पता न होता
कि आज थोड़ा दर्द तो है
इंसान को इंसान से
यह गम सलामत रहे तू
वरना
इंसान ही इंसान को न पूछता

सुन! ए दौलत तू भी सुन
अगर पैसा न होता रिश्तों में
तो इस तरह भाई -भाई से न छूटता

न ठोकर लगती अरमानों को
और न ये शीशाये दिल टूटता

भारद्वाज भवन
मंदिर मार्ग कांगड़ा
हिमाचल प्रदेश 176001
मोबाइल 94181 87726

कलम मेरी कह रही है

-वीरेंद्र शर्मा

अवलोकित कर आज धरा को
अश्रुधारा बह रही है
अनिवार्य है विप्लव नया
अब कलम मेरी कह रही है।

अनियन्त्रित सब नियम यहाँ
सिद्धांत यहाँ अस्थाई हैं
संचय की प्रवृति बनी है
अनैतिकता ही समाई है
ग आलोकित करने वाली
भ्यता अब है रो रही
लव नया,
कह रही है।

ा, दया-धर्म का
दिखता है नित पतन यहाँ
भ्रष्ट आचरण पुजता है
नित दानवता को नमन यहाँ

सुख से हुई अचम्भित
मानवता अब सो रही है?
अनिवार्य है विप्लव नया,
अब कलम मेरी कह रही है।

रामपुर बुशहर, जिला शिमला (हि.प्र.)
09459977143, 09129395440
ईमेल-solutionwithme@yahoo.com

क्या आपको पता है?

1. चीनी को जब चोट पर लगाया जाता है, दर्द तुरंत कम हो जाता है।
2. जरूरत से ज्यादा टेंशन आपके दिमाग को कुछ समय के लिए बंद कर सकती है।
3. 92 % लोग सिर्फ हँस देते हैं जब उन्हें सामने वाले की बात समझ नहीं आती।
4. बतक अपने आधे दिमाग को सुला सकती है जबकि उनका आधा दिमाग जगा रहता।
5. कोई भी अपने आप को सांस रोक कर नहीं मार सकता।
6. स्टडी के अनुसार होशियार लोग ज्यादा तर अपने आप से बातें करते हैं।
7. सुबह एक कप चाय की बजाए एक गिलास ठंडा पानी आपकी नींद जल्दी खोल देता है।
8. जुराब पहन कर सोने वाले लोग रात को बहुत कम बार जागते हैं या बिल्कुल नही जागते।
9. फेसबुक बनाने वाले मार्क जुकरबर्ग के पास कोई कालेज डिगरी नहीं है।
10. आपका दिमाग एक भी चेहरा अपने आप नहीं बना सकता आप जो भी चेहरे सपनों में देखते हैं वो जिदंगी में कभी ना कभी आपके द्वारा देखे जा चुके होते हैं।
11. अगर कोई आपकी तरफ घूर रहा हो तो आप को खुद एहसास हो जाता है चाहे आप नींद में ही क्यों ना हो।
12. दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग कीया जाने वाला पास वर्ड 123456 है।
13. 85 % लोग सोने से पहले वो सब सोचते हैं जो वे अपनी जिंदगी में करना चाहते हैं।
14. खुश रहने वालों की बजाए परेशान रहने वाले लोग ज्यादा पैसे खर्च करते हैं।
15. माँ अपने बच्चे के भार का तकरीबन सही अदांजा लगा सकती है जबकि बाप उसकी लम्बाई का।
16. पढ़ना और सपने लेना हमारे दिमाग के अलग-अलग भागों की क्रिया है, इसीलिए हम सपने में पढ़ नहीं पाते।
17. अगर एक चींटी का आकार एक आदमी के बराबर हो तो वो कार से दोगुनी तेजी से दौड़ेगी।
18. आप सोचना बंद नही कर सकते।
19. चींटीयाँ कभी नहीं सोती।
20. हाथी ही ऐक ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता।
21. जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी है।
22. नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रमा पर अपना बायां पाँव पहले रखा था उस समय उसका दिल 1 मिनट में 156 बार धड़क रहा था।
23. पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण पर्वतों का 15,000 मीटर से ऊँचा होना संभव नहीं है।
23. शहद हजारों सालों तक खराब नही होता।
24. समुंद्री केकड़े का दिल उसके सिर में होता है।
25. कुछ कीड़े भोजन ना मिलने पर खुद को ही खा जाते है।
26. छींकते वक्त दिल की धड़कन 1 मिली सेकेंड के लिए रुक जाती है।

27. लगातार 11 दिन से अधिक जागना असंभव है।
28. हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि उससे 1 इंच लंबी कील बनाई जा सकती है।
29. बिल गेट्स 1 सेकेंड में करीब 12,000 रुपए कमाते हैं।
30. आप को कभी भी ये याद नहीं रहेगा कि आपका सपना कहाँ से शुरू हुआ था।
31. हर सेकेंड 100 बार आसमानी बिजली धरती पर गिरती है।
32. कंगारू उल्टा नहीं चल सकते।
33. इंटर नेट पर 80 % ट्रैफिक सर्च इंजन से आती है।
34. एक गिलहरी की उमर, 9 साल होती है।
35. हमारे हर रोज 200 बाल झडते हैं।
36. हमारा बांया पाँव हमारे दांये पाँव से बड़ा होता है।
37. गिलहरी का एक दाँत हमेशा बढ़ता रहता है।
38. दुनिया के 100 सबसे अमीर आदमी एक साल में इतना कमा लेते हैं जिससे दुनिया की गरीबी 4 बार खत्म की जा सकती है।
39. एक शुतुरमुर्ग की आँखें उसके दिमाग से बड़ी होती हैं।
40. चमगादड़ गुफा से निकल कर हमेशा बांई तरफ मुडती है।
41. ऊँट के दूध से दही नहीं बन सकती।
42. एक कॉकरोच सिर कटने के बाद भी कई दिन तक जिवित रह सकता है।
43. कोका कोला का असली रंग हरा था।
44. लाइटर का अविष्कार माचिस से पहले हुआ था।

फेसबुक से साभार

बैना

-राजेश पाठक

दीनानाथ ने अपने परिवार के साथ हाल ही में उस मोहल्ले में एक भाड़े के मकान में रहना शुरू किया था। कुल 20-25 परिवारों वाला मोहल्ला था वह। उस मोहल्ले से सटी एक खेलकूद लायक खाली जगह (यानि मैदान) थी जहाँ उस मुहल्ले के सभी बच्चे सुबह-शाम खेला करते थे। मुहल्ले के बड़े-बुजुर्ग भी वहाँ घूमा-टहला करते थे। मुहल्ले के लोगों में एक-दूसरे के साथ अच्छा तालमेल था। एक-दूसरे के सुख-दुःख में सभी भागीदार बने रहते थे। किन्हीं के यहाँ कोई मेहमान या अपने ही घर के बाहर रह रहे कोई लोग घर लौटते तो उनके द्वारा लाई गई मिठाइयाँ आदि मुहल्ले के सभी परिवारों में 'बैना' कहकर बांटे जाते थे।

सप्ताह बीतते-बीतते किस न किसी परिवार में बाहर से कोई न कोई मेहमान आ ही जाया करते थे और बैने भी घर-घर पहुँच ही जाते। बच्चे तो किसी के यहाँ मेहमान के आने के इंतजार में ही रहते। बैने में उन्हें मिठाइयाँ जो मिलनी होती थीं।

एक दिन की बात है। बच्चों ने देखा कि रीमा दी ससुराल से आई हुई थीं। सभी बच्चे खुश थे कि कल उन्हें मिठाइयाँ तो मिलनी ही मिलनी हैं। खेलकूद खत्म होने के बाद सभी बच्चे अपने-अपने घरों को लौट गए।

हर रोज की तरह सुबह तैयार होकर सभी बच्चे अपने-अपने स्कूल चले गए। शाम को स्कूल से लौटने के बाद दीनानाथ का बेटे अमित ने अपनी माँ से से कहा,

''मम्मी! रीमा दी कल अपने ससुराल से आई थीं ना?''

''हाँ! आई है, तो?'' मम्मी ने पूछा।

''फिर उनके यहाँ से बैना तो आया होगा। पहले मुझे बैने वाली मिठाई दो। मुझे मिठाई बहुत अच्छी लगती है।''

''रीमा आई तो जरूर है। पर उनके यहाँ से कोई बैना नहीं आया।'' अमित की मम्मी ने कहा।

''क्यों? उनके परिवार से हम लोगों की अनबन हो गई है क्या?'' अमित ने फिर पूछा।

''नहीं-नहीं। ऐसा कुछ नहीं है। दरअसल बात यह है कि रीमा अब कभी ससुराल नहीं जाएगी। इसलिए बैना भी नहीं आया।'' अमित की मम्मी बहुत उदास थी।

सहायक सांख्यिकी पदाधिकारी
जिला सांख्यिकी कार्यालय, गिरिडीह
झारखण्ड -815301 मो. 9113150917
मेल-hellomrpathak@gmail-com

जड़

–सारिका चौरसिया

सौंदर्य की प्रतिमूर्ति, स्वंय को सर्वगुण सम्पन्न समझने वाली लेखा जी का मानना था कि दुनिया की किसी भी उपलब्धि और सफलता पर सिर्फ और सिर्फ उनका ही अधिकार हो सकता है। स्वयं को स्थापित करने की होड़ में वे किसी भी हद को पार कर लेती थीं। साम-दाम-दंड-भेद की इस कला के उनके पति भी पारखी थे। उधर अपने कार्य से कार्य रखने वाली शांत चित्त किन्तु गलत पर त्वरित प्रतिक्रिया देने की अभ्यस्त सरिता रिश्ते में तो लेखा जी की जेठानी थीं किन्तु अपने पति के क्रोधी स्वभाव कारण वे विवश ही रहतीं।

सरिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी अतः उन्होंने पति के सहायतार्थ घर से ही ब्यूटीपार्लर चलाने का निर्णय लिया और अपनी मेहनत से सुचारू भी कर दिया। अब लेखा जी को यह भी नागवार गुजरा की मैं गृहणी! वह व्यवसायी! यह कैसे सम्भव है? अतः उन्होंने जड़ खोदनी शुरू की और महिला ग्राहकों को भड़काने का काम शुरू कर दिया। एक दिन सरिता ने प्रत्यक्ष देख लिया, एक ग्राहक जो दुल्हन सजाने के लिये बुकिंग करने आयी थी उसे वे कह रही थीं, ''सरिता से बेहतर शृंगार मैं करती हूँ, आप मुझे बुक करें।'' अवाक सरिता ने काफी प्रयास किया किन्तु ग्राहक भड़क चुकी थी और अविश्वास करते हुए उन्होंने इनकार कर दिया। इस तरह के अनेक उपक्रम करती लेखा जी अपनी मंशा में कामयाब होती जा रही थीं। डब्बों में से क्रीम निकाल लेना, चीजें गायब कर देना, उपकरण खराब कर देना यह सब मामूली कर्म थे उनके। जिसकी सरिता प्रत्यक्ष गवाह रहती किन्तु पारिवारिक मामला था, कुछ कह न पातीं।

अंततः साजिशों के तहत पारिवारिक क्लेश उपद्रव के साथ ब्यूटी पार्लर बन्द हो गया। पति की असहयोगी भावना की अभ्यस्त सरिता ने एक बार पुनः नियति मान धैर्य धर लिया।

किन्तु कहते हैं न कि मानव स्वभाव अंत तक प्रयास नहीं छोड़ता। जब तक जीवन है जीवन यापन के लिए संघर्ष को बिना शर्त जीता ही है। सरिता भी जीवन की नैया पार करती रही और साजिशों के दौर सहती रही। इस दौरान सरिता ने अपने जीवन के अनुभवों को लेखनी बद्ध करना शुरू कर दिया और ईश्वर की अनुकम्पा से वह प्रसिद्धि की तरफ मुड़ने लगी।

पुनः लेखा जी के पेट में दर्द शुरू हुआ और उन्होंने अपनी साजिशों को जबरदस्त रंग देना शुरू कर दिया तथा स्वयं के ही कभी कहे जुमले 'हमीं बनना चाहते हमीं से चिढ़ कर' को स्वयं पर सार्थक करने लगीं और कूद पड़ीं इस क्षेत्र में भी। एड़ी चोटी का जोर लगाती वे अब सरिता के सभी सम्पर्क खंगालने और आजमाने में जुट गयीं।

सरिता अब तक परिपक्वता की सभी सीमाएँ पार कर प्रौढ़ हो चुकी थीं। अनुभवों ने उन्हें भी बहुत कुछ सिखाया था।

यह भी सच है कि सुंदरता चार दिन की मेहमान होती है और धोखे तथा मक्कारी की भी एक उम्र होती है। इसी का लाभ सरिता जी को मिला। उन्होंने लेखा जी के खिलाफ मोर्चा खोल लिया दिया, अब उनकी जड़ें मजबूत करने वाले उनके बच्चे बड़े हो चुके थे और अपनी माँ की जड़ों को सींच रहे थे। अब उन्हें पति के असयोगी रवैये की उतनी चिन्ता नहीं थी।

मिर्ज़ापुर उत्तर प्रदेश।
Sarikachaurasia9@gmail-com
मो. 9452185352.
-6393356440.

बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए कटिबद्ध 'बालसाहित्य संस्थान, अलमोडा'

राजेन्द्र ओझा

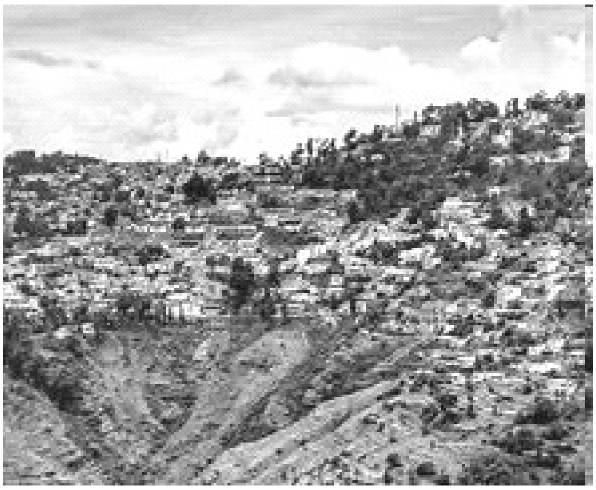

अलमोडा (उत्तराखण्ड) स्थित 'बालसाहित्य संस्थान' बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने के साथ ही साथ उनके सर्वांगीण विकास के लिए एक प्रतिबद्ध संस्थान है। संस्थान द्वारा वर्ष 2004 से 'बाल प्रहरी' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है। पत्रिका के संपादक श्री उदय किरौला जी बच्चों में शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच विकसित करने वाली राष्ट्रीय स्तर की संस्था 'भारत ज्ञान विज्ञान समिति' से जुड़े हैं एवं उन्होंने तथा उनके अन्य साथियों ने पाया कि नन्हें एवं मानसिक रूप से विकसित होने की उम्र के बच्चों के पास अवैज्ञानिक एवं अतार्किक सामग्री पहुँच रही है जो उनके उचित विकास में न केवल बाधक है अपितु एक अच्छे नागरिक के रूप में भी उनके निर्माण को रोक रही है। 'बाल प्रहरी' का प्रकाशन बच्चों के मध्य वैज्ञानिक सोच संपन्न सामग्री पहुँचाने के उद्देश्य से ही प्रारम्भ किया गया। शुरुआत में हस्तलिखित रूप में प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका की वर्तमान में 3600 प्रतियाँ प्रकाशित हो रही है जिसमें से 600 से ज्यादा प्रतियाँ गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भेजी जाती है। प्रसन्नता की बात यह भी है कि शिक्षा निदेशालय, उत्तराखंड के माध्यम से प्रदेश के विद्यालयों में भी यह पत्रिका वितरित की जा रही है। 52 पेज की इस पत्रिका में करीब एक चौथाई पृष्ठों पर केवल बच्चों की रचनाएं प्रकाशित की जाती है। इसमें कविता, कहानी, बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्र, चुटकुले, स्कूल-पर्यावरण आदि से संबंधित लेख आदि सभी का समावेश किया जाता है। पत्रिका की एक अन्य एवं महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भूल-भूलैया, सूडोकू, पहेलियाँ, खोजबीन, शब्द पहेली, अंक पहेली, वर्ग पहेली आदि भी प्रकाशित होती हैं जो बच्चों की जिज्ञासा बढ़ाने के साथ ही साथ मानसिक विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। बाल प्रहरी के प्रत्येक अंक में लगभग 100 बच्चों का जुडाव प्रत्यक्ष तौर पर रहता है। यह किसी भी बाल पत्रिका के लिए गौरव करने लायक बात है। इतनी ज्यादा संख्या में बच्चों की सक्रियता संपादक समूह की अथक मेहनत एवं बच्चों के प्रति उनके समर्पण भाव को भी प्रदर्शित करता है।

संस्थान द्वारा बच्चों में हर तरह का विकास हो

इस दृष्टि से पाँच-पाँच दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है। अब तक 16 राज्यों में 289 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इसी सिलसिले में संस्थान द्वारा वर्ष 2006 से 'राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठियों' का आयोजन भी किया जा रहा है जिसमें देशभर के बालसाहित्यकार जुड़ते है। आगामी वार्षिक आयोजन 8, 9 एवं 10 जून 2023 को हरिद्वार से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित लालढांग में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। इन वर्षों में संस्थान ने एक उपलब्धि यह भी हासिल की कि उन्होंने अथक प्रयासों से देशभर से प्रकाशित होने वाली बाल पत्रिकाओं में से 68 बाल पत्रिकाओं का संकलन किया है।

बालसाहित्य संस्थान की एक महत्वपूर्ण एवं रेखांकित करने योग्य गतिविधि है- ऑनलाइन कार्यशाला। कोरोना काल से प्रारंभ इस ऑनलाइन कार्यशाला की इस लेख को लिखने की तारीख 19 अप्रैल 2023 की कड़ी 649वीं थी एवं यह आगे भी निरंतर जारी है। मेरी दृष्टि से इतनी लंबी अवधि तक चलने वाला ऑनलाइन कार्यक्रम संभवतया यह अकेला है एवं मैंने संस्थान के सचिव एवं पत्रिका के संपादक माननीय श्री उदय किरौला जी से कुछ दिनों पूर्व अनुरोध भी किया था कि आपको इस ऑनलाइन आयोजित की जाने वाली कार्यशाला हेतु वर्ल्ड रिकार्ड के लिए भी प्रयास करना चाहिए लेकिन उनका कहना था कि हमारे लिए काम महत्वपूर्ण है, रिकार्ड की तरफ हमारा ध्यान नहीं है। इस ऑनलाइन कार्यशाला में कविता लेखन, कविता वाचन, कहानी लेखन, कहानी वाचन, पत्र लेखन, आत्मकथा वाचन, सामान्य ज्ञान, विभिन्न प्रकार की पहेलियों यथा - वर्ग पहेली, शब्द पहेली, संस्कृत श्लोक वाचन, मेरी चार अच्छी आदतें एवं ऐसी चार आदतें जिसे बदलना चाहता हूँ, कठिन शब्द, देश भक्ति गीत, लोकगीत, कुमाउनी गीत, गढ़वाली गीत, मेरे प्रिय वैज्ञानिक, मेरे प्रेरणास्रोत, मेरा व्यक्तित्व, वाद-विवाद, त्वरित भाषण, बच्चों के त्यौहार आदि जैसी लगभग 36 विधाओं पर कार्यशालाएँ नियमित रूप से आयोजित की जा रही है। इन विषयों से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्थान बच्चों को हर प्रकार की जानकारी उपलब्ध करवाने हेतु किस स्तर तक प्रतिबद्ध एवं समर्पित है। इन ऑनलाइन कार्यशालाओं की एक खास बात यह भी है कि इसके अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि एवं संचालन बच्चों द्वारा ही किया जाता है। प्रतिभागी तो बच्चे ही रहते हैं।

भारत के किसी भी राज्य का कोई भी छात्र इस ऑनलाइन कार्यशाला में सम्मिलित होना चाहता है या पत्रिका हेतु अपनी रचनाएँ प्रेषित करना चाहता है तो वह निम्नलिखित पते पर अपनी रचनाएँ भेज सकता है। विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकता है -

श्री उदय किरौला,
संपादक- बाल प्रहरी
सचिव- बालसाहित्य संस्थान, दरबारी नगर, अलमोडा (उत्तराखण्ड) 263601, मो 9412162950
मेल-balprahri@gmail-com
वेबसाइट www-balprahri-com

===============

पहाड़ी तालाब के सामने,
बंजारी मंदिर के पास,
मोनिका मेडिकल के बाजू
वामनराव लाखे वार्ड (66) कुशालपुर
रायपुर (छत्तीसगढ़) 492001

मो.9575467733
8770391717

पारस

-आशा शैली

गतांक से आगे:-

.....दीवान चन्द त्रिखा ने आश्चर्य से अपने बचपन के मित्र को देखा तो वह फिर बोल उठा, ''देख दिवाने! मेरे छोटे भाई की छोटी वाली लड़की कुँवारी है। तू कहे तो मैं बात को आगे बढ़ाऊँ?'' परमेशर की बात भी त्रिखा जी के कान में तो पड़ ही गई थी, उधर जनानखाने से भी एक और भी रिश्ता आया था। त्रिखा जी सोच रहे थे, कैसा है हमारा ये समाज? अभी जानकी की चिता की आग भी ठण्डी नहीं हुई कि सोमे के रिश्ते आने शुरू हो गए, पर क्या करें लड़कियों वाले भी? अच्छे खाते-पीते घरों के लड़के झपटने में कोई देर नहीं करना चाहता, चाहे लड़का विधुर ही क्यों न हो। पर क्या सोमा मान जाएगा? एक तरह से अच्छा भी है कि रिश्ते आ रहे हैं। अब अगर सोमा शादी के लिए हाँ कर दे तो उनकी आधी चिन्ता तो दूर हो ही जाएगी। घर भी सँभल जाएगा और सोमा भी, पर हाँ! बस देखना यही है कि आने वाली ऐसी हो कि पारस न रुले। उस गरीब को तो यह भी पता नहीं कि उससे उसकी माँ की छाया छीन ली है परमात्मा ने।

''कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। ऐसे तो घर नहीं चल सकता। बच्चा भी छोटा ही है। जैसे-तैसे सँभल ही जाएगा। पर सोमा मान जाएगा क्या? उसका जखम अभी ताजा है।'' वह जैसे अपने आप से ही कह रहे थे।

''तो क्या कहता है तू?'' करमा अर्थात् करमचन्द थोड़ा उत्साहित होकर फिर बोल उठा।

''मुझे वकत दे करमे। मैं देखता हूँ, सोमा किसी तरह मान जाए। क्या कहूँ? मेरा गरीब भाई लुटेया गया और बच्चा! उसका क्या होगा? पर तू मुझे सोचने तो दे। सोच कर देखता हूँ। एक तरह से देखा जाए तो, कहता तो तू ठीक ही है पर पहले सोमे को भी तो पूछ लूँ, घर में भी राय कर लेता हूँ। कैलाश क्या कहती है, देखता हूँ। वह बड़ी ही समझदार है। जो भी फैसला देगी सोचकर ही देगी।''

''चंगा। सोच कर जवाब देना। मैं चलता हूँ। मुझे तेरे जवाब की उडीक (प्रतीक्षा) रहेगी।'' कहकर करमचन्द घर चला गया।

....

रात को त्रिखा जी ने पत्नी से बात की तो उसने उन्हें बताया, करमे की जनानी (पत्नी) ने उनसे भी यह बात की थी और वह भी इसी बात पर सोच-विचार कर रही थी। दूसरे दिन पास के एक और गाँव से भी रिश्ते की बात चल निकली तो उन्होंने धीरे से भाई का मन टटोलने की ग़रज से बात उठाई,

''सोमनाथ, तूने आगे के लिए क्या सोचा है?''

''क्या सोचूँगा वीर जी, धरम शान्त (सत्रहवीं तिथि का ब्रह्मभोज) के बाद पारस को अपने पास यहीं पर रख लूँगा। सत्तो के ससुराल वालों को भी क्यों परेशान किया जाए। मेरे साथ जो हुआ उसमें उस बेचारी का क्या कसूर है। जानकी के इलाज में कमी न तो आपने रखी और न उसके पेके (मायके वालों) ने रखी। अब उसकी ज़िन्दगी इतनी ही थी और जब कैंसर का इलाज ही नहीं तो क्या किया जा सकता है?''

''पर अब औरत के बिना यह घर कैसे चलेगा? या तो तू भी रावलपिण्डी आ जा पारस को लेकर।''

''वीर जी, मैं अगर पिण्डी आ गया तो खेतों का क्या होगा? बापू कहता था, खेती खसमा सेती होती है।''

''हाँ! पर तू डेढ साल के बच्चे के साथ खेती और घर कैसे चलाएगा?''

''यहाँ पर एक नौकर है जो बाल-बच्चे वाला है, उसकी औरत पारस को सँभाल लेगी और रोटी भी बना देगी।''

''कमलेया (पगले), इस तरह घर नहीं चलता।''

''तो कैसे चलता है? आप ही बता दो?''

''दो-तीन रिश्ते आए हैं.....''

अभी भाई की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि सोमनाथ की आँखें छमाछम बरसने लगीं, वह हकबका गया और झटके से उठकर खड़ा हो गया, ''आप यह क्या सोचने लगे हैं वीर जी? नहीं....नहीं....ऐसी बात मत कहिए।'' और वह दोनों हाथों में मुँह दबाकर धम्म से फिर वहीं ज़मीन पर बैठ गया और फूट-फूट कर रोने लगा। दीवान चन्द त्रिखा ने प्यार से छोटे भाई की पीठ थपथपाई, ''हौसला रख, हौसला।'' और भारी मन लिए दूसरी तरफ मुड़ गए।

....

समय के साथ सत्रहवां भी हो गया। दीवान चन्द त्रिखा भी पत्नी को गाँव में ही छोड़कर बच्चों के साथ रावलपिण्डी वापस लौट गए। सब चले जाएँगे तो सोमनाथ सचमुच पगला जाएगा। उसको सँभालने के लिए कुछ दिन कैलाश का वहाँ रहना उन्हें उचित लग रहा था। अभी सत्या भी ससुराल नहीं गई थी पर जाना तो होगा ही। सो कुछ दिन बाद वह भी चली गई पारस को साथ लेकर क्योंकि पारस उसी के साथ हिला-मिला था। सोमनाथ को घर खाली लग रहा था, क्या करे? उसका कहीं दिल नहीं लगता था। सब तरफ जानकी की छवि दिखाई देती और वह अचानक रोने लगता। हाय! वह तो अकेला रह गया, घर में गऊ-भैंसें भी तो बंधी हैं, उन्हें सानी-पानी तो देना ही पड़ेगा।

त्रिखा जी नौकरी पर लौट तो आए पर भाई की चिन्ता उन्हें अन्दर ही अन्दर खाए जा रही थी। इधर कैलाश से पति की चिन्ता छिपी हुई नहीं थी पर कर ही क्या सकती थी। वह भी कुछ दिन बाद शहर लौट गई, बच्चों की पढ़ाई की चिन्ता अलग से थी। दरअसल उसे भी इसी बात ने परेशान कर रखा था। सब से बड़ी चिन्ता यह थी कि अब घर कैसे चलेगा? अभी तक पूरी ज़मीनों की देख-भाल सोमनाथ ही करता था। जानकी के भरोसे पर घर चल रहा था, पर अब?

अब उसे घर का इंतज़ाम भी देखना पड़ेगा, हाली की, चौकीदार की, सभी नौकरों की तनख़ाह , दिहाड़ीदारों की रोटी और दूसरी ज़रूरतें जो जानकी के जिम्मे थीं वे भी अब सोमनाथ के जिम्मे आ गई हैं। कैसे करेगा वह अकेला यह सब? एक औरत की जरूरत से तो वे इनकार नहीं कर सकते थे। अब अक्सर ही रात को दोनों के बीच इस विषय पर चर्चा हो जाती।

''सत्या पारस को ले तो गई है, पर कितने दिन बच्चे को रख सकेगी? उसके ससुराल वाले पता नहीं क्या कहें? अगर काकाजी की दूसरी शादी कर दी जाए तो गाड़ी फिर पटरी पर आ जाएगी। आप क्या कहते हो?'' त्रिखा जी को एक गम्भीर सोच में पड़ा देख एक दिन कैलाश ने फिर बात उठा दी।

''हाँ, यही बात मैं भी सोच रहा था, पर सोमे से बात करने की तो हिम्मत नहीं पड़ रही। बहुत मेल था दोनों में, न कोई लड़ाई न झगड़ा।''

''अगर कभी कोई बात होती भी थी, तो जानकी मेरे पास ही आती थी काका जी की शिकायत लेकर और आप की डाँट खाकर जानकी के सामने जब काका जी कान पकड़ते तो वह बच्चों की तरह खुश हो जाती थी।'' कैलाश देवर को काका जी (बच्चा जी) ही कहती थी। कभी नाम से नहीं पुकारा।

''सच कहती हो कैलाश तुम, पर अब किया क्या जाए? कुछ तो सोचना ही पड़ेगा न।''

''लोहड़ी के 'दिण' (मृत्यु के बाद पड़ने वाला त्योहार) पर तो गाँव जाना ही पड़ेगा, जानकी के जाने के बाद पहली लोहड़ी आ रही है। सारी बरादरी आएगी, सोग है। मेरी मानो तो तब कुछ छुट्टी ज्यादा ले लो। देखते हैं, कोशिश करो अगर काका जी मान जाएँ तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।''

''हाँ कहती तो ठीक हो। देखते हैं एक और कोशिश करके। सत्तो के ब्याह को भी तो ज्यादा वक्त नहीं हुआ, उसके ससुराल वाले भी पता नहीं क्या सोच रहे होंगे? कहीं पारस की वजह से मियां-बीवी के बीच में दरार न पड़ जाए। वैसे भी पुलसिये ज़रा डाढे (सख़्त) ही होते हैं।''

''ठीक कहते हो जी, इस बार हम पारस को अपने साथ ले आयेंगे। हमारे बच्चे तो बड़े हो गए हैं। हमें क्या परेशानी है? मेरा भी दिल लगा रहेगा।''

''हाँ यही ठीक रहेगा।''

....

गाँव में लोहड़ी (मकर संक्रान्ति) के दिन सब लोग त्रिखेयों (त्रिखा परिवार) की हवेली में इकट्ठे हुए तो सत्या के ससुर ने कह ही दिया,

''चौधरी जी, अब सोमनाथ होरां (सोमनाथ जी) की दूसरी शादी कर ही देनी चाहिए। कब तक बच्चा इधर-उधर धक्के खाता रहेगा?''

बात थी तो सच्ची पर त्रिखा जी को बहुत चुभी, फिर वे भी तो दीवानचन्द त्रिखा ही थे। बड़े धैर्य से उन्होंने उत्तर दिया, ''चौधरी जी, कहना तो आपका सवा-सोहल आने सच है। सोमनाथ को राज़ी करने में थोड़ा वक्त और लगेगा। अभी घाव हरा है, पर मुझे विश्वास है कि मैं कर लूँगा और रहा पारस? तो उसकी चिन्ता आप न करें, वह तो सत्या के साथ हिला-मिला है इसलिए वह उस समय उसे अपने साथ ले गई। इस बार मैं उसे अपने साथ ले जाने का फैसला पहले ही कर के आया हूँ।''

''अरे नहीं...नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं था....'' दीवान चन्द त्रिखा के उत्तर से समधी खिसिया तो जरूर गए थे, पर बात बनती देख चुप रह गए।

....

क्रमशः

राष्ट्रभाषा का प्रश्न

सीताराम पाण्डेय

हिमालय के पद-तल से लेकर नील जल प्रक्षालित कन्याकुमारी तक का भू-भाग प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त के पुत्र 'भरत' के नाम पर भारतवर्ष कहा जाता है। इस भूमि की सांस्कृतिक अभिव्यंजना करने वाली प्रारंभिक भाषा संस्कृत की संज्ञा से विभूषित है। अतीत में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विकास शीर्ष बिन्दु पर पहुँच गया था। इस विकास का मुख्य साधन संस्कृत भाषा ही रही।

काल-चक्र चलता रहा। परिवर्तन हुए और भारत में इस्लाम का आगमन हुआ। इस्लाम के साथ एक नयी संस्कृति आई, जिस संस्कृति का माध्यम 'अरबी' और 'फारसी' भाषाएँ थी। शासन-तंत्र पर इसका अधिकार हुआ। शासक और शासित की दो संस्कृतियाँ एवं दो भाषाएँ थीं। साथ-साथ रहना और दैनिक कार्यों का संबंध भी था। परिवेश और परिस्थिति की विवशता से दोनों एक दूसरे की भाषा समझने की कोशिश करने लगे।

उस समय राजधानी दिल्ली थी। वहाँ की स्थानीय बोली में अरबी, तुर्की और फारसी के शब्द मिलने लगे। एक नयी भाषा देशी आधार पर, विदेशी रंग लेकर पनपने लगी। दिल्ली में अनेक प्रान्तों के निवासी आते और यहाँ से अनेक प्रान्तों के लिए यात्रा भी करते थे। इस स्थिति में दिल्ली की खड़ी बोली, विदेशी शब्द के मिश्रण से नया रंग लिए, राजनीतिक कारणों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँच गयीं। राज-कार्यों की भाषा फारसी रही, किन्तु बोल-चाल में खड़ी बोली हिन्दी का प्रचार-प्रसार होता गया।

इस्लाम के उदय से एक नयी स्थिति का आगमन हुआ और अनेक संत 'एकेश्वरवाद' का प्रचार करने लगे तथा जाति-पाँति, छूआ-छूत आदि की निन्दा करने लगे। कबीर, नानक आदि ऐसे ही संत हुए, जिनके द्वारा खड़ी बोली में भी रचनाएँ की गयीं। ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी खड़ी बोली को अपने धर्म प्रचार का माध्यम बनाया। यहाँ तक कि आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने भी अपना आध्यात्मिक 'सत्य प्रकाश' नामक ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखा।

इस प्रकार राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों ने हिन्दी को एक महत्वपूर्ण स्थान पर बैठा दिया। इधर अरबी, फारसी के बाहुल्य और विदेशी का रंग धारण किए खड़ी बोली 'उर्दू' के नाम से मुसलमानों की भाषा कही जाने लगी।

लगभग बीसवीं सदी में राजनैतिक जागरण आया और हिन्दू-मुस्लिम मतभेद के कारण संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का समर्थन हिन्दुओं ने किया और फारसी भाषा की ओर झुकी 'उर्दू' भाषा का समर्थन मुसलमानों ने किया। महात्मा गाँधी ने एक मध्यम मार्ग का सुझाव दिया और हिन्दुतानी नाम से 'खड़ी बोली' हिन्दी को पुकारा जाने लगा।

भारत विभाजन के पश्चात हिन्दी-उर्दू की प्रतियोगिता समाप्त हो गयी। 'उर्दू' पाकिस्तान की राजभाषा हुई और भारत के संविधान परिषद् ने 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया। पन्द्रह वर्षों का समय अंग्रेजी को क्रमशः हटाने और हिन्दी को

उसके स्थान पर बैठाने के लिए दिया गया।

उस समय भी संविधान परिषद् में हिन्दी का कुछ लोगों ने खुलकर विरोध किया। अनेक उच्च नेताओं को उसमें साम्प्रदायिकता, खण्ड होती एकता और क्षेत्रवाद की गंध मालूम होने लगी थी। लेकिन राजर्षि टंडन जी, सेठ गोविन्द दास, नवीन जी, डा. राजेन्द्र प्रसाद, पं. जवाहर लाल नेहरू आदि विद्वानों ने इसका जोरदार खंडन किया। संविधन में तो इसकी स्वीकृति भी मिल गयी, लेकिन हिन्दी-विरोधी चुप नहीं बैठे। तात्कालिक केन्द्र सरकार ने भी हिन्दी के प्रति विशेष उत्साह नहीं दिखाया।

निर्धारित पन्द्रह वर्षों की अवधि व्यतीत हो जाने के बाद भी हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी, स्वाभाविक स्थान को प्राप्त नहीं कर सकी और उसकी दशा-दिशा में कहीं-कोई उत्कर्ष भी नहीं दिखाई पड़ा। बल्कि बंगाल एवं तमिलनाडु में तो हिन्दी की घोर उपेक्षा की जा रही थी। वयोवृद्ध नेता 'राजगोपालचारी' ने हिन्दी की साम्राज्यवादी नीति का प्रवल विरोध प्रारम्भ किया था। हाँलाकि राजा जी एक समय हिन्दी के पुरजोर समर्थन भी करते थे।

तात्कालिक परिवेश में भाषा के प्रश्न पर भारत वर्ष में काफी कठिन समस्या खड़ी हो गयी थी। देश के अनेक विद्वान और प्रसिद्ध नेता इस अभियान में सम्मिलित थे। परिस्थिति विषम हो गयी थी। भाषाधार राज्यों के संगठन ने भाषा की समस्या को और जटिल बना दिया था। देश के अनेक विद्वान और हितैषी उस समय भाषा के नाम पर फैली हुई विघटन भावना में जागरूक हो गये थे।

बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य एवं विख्यात विद्वान् विश्व मोहन कुमार सिंह ने तो कहा कि- ''राष्ट्रभाषा का स्थान तो देशी भाषा को मिलना ही चाहिए। विदेशी भाषा को राष्ट्रभाषा के स्थान पर बनाए रखना राष्ट्रीय गौरव के विरुद्ध है, फिर भी देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए हमको अभी 'अंग्रेजी' को उस स्थान पर बनाए रखना चाहिए।''

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री, कन्हैया लाल मुंशी ने भी इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा था कि-''आज विश्व विद्यालयों में क्षेत्रीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जा रहा है। इसका प्रभाव देश की भावनात्मक एकता एवं सामान्य विचारक मंडल की दृष्टि से अहितकर होगा। अतः श्री मुंशी ने सुझाव दिया कि-

''क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों की केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापना हो, जहाँ 'अंग्रेजी' माध्यम से उच्च शिक्षा दी जाये, जिससे देश की एकता की रक्षा हो सके।''

तात्कालिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में विचार करने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि संविधान द्वारा प्रदत्त राष्ट्रभाषा के स्थान को हिन्दी द्वारा ग्रहण किये जाने के मार्ग में विभिन्न बाधाएँ खड़ी हैं। एकता और अखण्डता के प्रश्न पर परिस्थितियाँ प्रतिकूल परिदृश्य थीं। भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी भाषावाद से उग्ररूप में प्रभावित थे और भावनाएँ सबल प्रतीत हो रही थीं।

उस समय पंजाब में सिक्खों के द्वारा हिन्दी का विरोध हो रहा था। वातावरण विषाक्त बना हुआ था। अतः अनेक विद्वानों, नेताओं का मत था कि इस विषम स्थिति में अंग्रेजी को अखिल भारतीय स्तर पर रहने दिया जाये और हिन्दी अपने को योग्य बने तथा वांछित विकास करें।

आज इसके सात-आठ दशक बीत गये। संप्रति हिन्दी इतनी शक्तिशाली हो चुकी है कि अब इसे किसी की सहायता चाहिए ही नहीं। इसका शब्द भंडार इतना परिपूर्ण है कि वह अब दूसरे का मुँह जोहना पसंद नहीं करती। झोपड़ी से महल तक इसकी पैठ बन गयी है। आसेतु हिमालय की भूमि पर हिन्दी की धाक है।

वह ठेठ किसान के दिल में भी घर कर सकती है तथा सुसम्पन्न नागरिक का चित्त चुराने में भी चतुर है। इसे सूर और तुलसी ने चंदन-चर्चित किया है, तो केशव, देव, बिहारी ने इसे नख-शिख अलंकृत किया है। कबीर और जायसी ने इसकी दुन्दुभि बजाई है। रहीम और रसखान ने इसे अमृत पिलाया है, तो भारतेन्दु और द्विवेदी ने इसकी जड़ को पाताल तक पहुँचायी है। अब शेषनाग के मस्तक से इसे उखाड़ने का दुस्साहस जो करेगा, वह निश्चय ही भूकम्प ध्वस्त होगा।

अब हिन्दी धूसर खेत की मूली नहीं है। इसके स्वर में कृष्ण की बाँसुरी की सुरीली तान है। इसकी वाणी में राम के धनुष-टंकार का गम्भीर गर्जन है और उसके नेत्रों में भूषण एवं गुरु गोविन्द सिंह की तेजस्विता है।

किन्तु, सब तरह से संपन्न होने के बावजूद हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर व्यावहारिक रूप से आज भी आसीन नहीं है। भारतीय संविधान ने तो इसे लगभग सत्तर-अस्सी वर्ष पहले ही यह अधिकार दे दिया था। किन्तु, अभी भी व्यावहारिक स्तर पर अंग्रेजी की ही प्रमुखता प्रभूत रूप से परिदृश्य है।

आजादी के इतने वर्ष बीत गये, लेकिन हमारे देश में पाठशालाओं से लेकर कार्यालयों से लेकर कचहरी तक, प्रशासन तक के अधिकांश कार्य अंग्रेजी में ही होते हैं। अन्य देशों के लोग जब हमें अंग्रेजी में कार्य करते देखते हैं, तो उन्हें बेहद आश्चर्य होता है और वे यदा-कदा पूछ भी बैठते है कि भारत की अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है क्या? तो उस समय लज्जा से हमारा सिर झुक जाता है।

विदेशों में हिन्दी :- हिन्दी के लिए बहुत बड़ी उत्साहवर्द्धक बात यह भी है कि उसका ज्ञान और प्रचार भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विदेशों में भी इसका पुरजोर प्रचार-प्रसार है। कुछ दिन पहले तक जो भारत का ही अंग था और आज जो पाकिस्तान के नाम से विख्यात है। वहाँ हिन्दी की ही प्रधानता है। भले ही वह फारसी लिपि में लिखी जाये, परन्तु भाषा तो वहाँ हिन्दी ही है।

हमारा पड़ोसी नेपाल के तो आधे हिस्से की पूरी तराई की भाषा हिन्दी ही है। जहाँ तक वहाँ की लिपि का संबंध है वह समस्त नेपाल में देवनागरी ही है।

इन देशों के सिवा अन्य और देशों के लोगों में भी 'हिन्दी' पढ़ने-लिखने की उत्सुकता बढ़ती जा रही है और भारत का महत्व संसार की राजनीतिक एवं अर्थनीति में जैसे-जैसे वृद्धि होगी, लोगों को यहाँ की राष्ट्रभाषा जानने के लिए आकर्षण बढ़ेगा।

लंदन की प्राच्य भाषा के अध्ययन के लिए स्थापित संस्था द्वारा हिन्दी के संबंध में अच्छा कार्य हुआ है। 'रूसी' लोगों के हृदय में हिन्दी के प्रति आकर्षण का इसी से अनुमान कर सकते हैं कि वहाँ रामायण का अनुवाद कराया गया है और बहुत-से रूसी हिन्दी लिख-पढ़ रहे हैं। चीन वासियों में हिन्दी-प्रेम का यह हाल है कि पेकिंग विश्व विद्यालय में हिन्दी की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था की जा चुकी है।

आप चाहे अफ्रीका महादेश में जायें या फिजी द्वीप समूह में ट्रिनीडाड, डमरारा या सुरीनाम अथवा मारीशश उपनिवेश में, आपको यह देखकर आश्चर्य के साथ हर्ष भी होगा कि सर्वत्र हिन्दी की कीर्ति पताका फहरा रही है। पर दुख तो इस बात का है कि विदेशों में हिन्दी के लिए जितना प्रेम और उत्साह है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति हम उतने ही उदासीन है।

हमलोगों को अपना यह रुख बदलना चाहिए। हिन्दी विद्वानों को उनके विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापनार्थ अध्यापकों को भेजना चाहिए। यदा-कदा हिन्दी विद्वानों के प्रतिनिधि मंडल को भी वहाँ जाना चाहिए और हिन्दी की पुस्तकें उन्हें

भेंट करनी चाहिए।

सभी देशों में उस देश की अपनी मातृभाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है, पर भारतवर्ष ही एक ऐसा दुर्भाग्यशील देश है, जहाँ उसके बालकों को विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा देकर, उनकी प्रतिभा का पतन किया जा रहा है। Committee of Public Instruction के सभापति लौर्ड मेकाले ने भारतीय भाषा को शिक्षा-विभाग से दूध की मक्खी के समान निकाल कर जो अनुचित प्रयत्न किया था, वह हमारे दुर्भाग्य से सफल हुआ। उस पर से अंग्रेजी के राजभाषा होने के कारण प्राय: सभी महकमों के काम अंग्रेजी भाषा में होने से नौकरी-पेशा लोगों को विवश होकर अपनी मातृभाषा की प्यारी सुखद गोद छोड़कर विदेशी बीबी के प्रेम में लुब्ध होना पड़ रहा है। विदेशी शासन का प्रभाव हमारे सामाजिक तथा नैतिक भावों पर पड़ने के साथ-साथ हमारे साहित्यिक जीवन पर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।

अब हमारे बच्चे अंग्रेजी के पीछे पड़े शरीर, प्राण तथा संपत्ति सब नष्ट कर रहे है। आज अंग्रेजी के बज्रपात से सैकड़ों नहीं, लाखों करोड़ों भारत के आशा-कुसुम अपना-अपना अस्तित्व गँवाकर न मालूम कहाँ विलीन हो गये, जिनका कुछ नामोनिशान नहीं है। यह क्षति हमारे लिए असह्य है।

<u>आत्म अभिव्यतिफ :-</u>

देवनागरी हमारी राष्ट्रलिपि बन गई। लेकिन आज भी छात्रों को अंग्रेजी बाहुल्य सिलेबसों का बस्ता ढोना पड़ रहा है। भारतीय न्यायलयों में अंग्रेजी की ही प्रधानता है। अत: इसके लिए हमलोगों को सशक्त प्रयास करना होगा। अन्य प्रान्तीय भाषाओं से हमें शब्द लेकर हिन्दी का शब्द भंडार संपन्न करना होगा। हिन्दी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों का प्रणयन करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इतिहास, राजनीति, भौतिकी, रसायनशास्त्र, चिकित्सा और इंजीनियरिंग आदि विविध विषयों पर हिन्दी भाषा में ग्रन्थ लिखा जाना चाहिए।

हिन्दी समर्थकों को भी उदार नीति ग्रहण करना चाहिए। उर्दू के भी प्रचलित शब्दों और अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा के प्रचलित शब्दों का बहिष्कार नहीं करना चाहिए। हिन्दी के पाचन-शक्ति इतनी शक्तिशाली बन गयी है कि अपने देश में जन्म धारण करने वाली 'उर्दू' के साथ अरबी, फारसी को ही नहीं पचाया, बल्कि अंग्रेजी, लैटिन आदि अन्य भाषाओं के आनेवाले शब्दों को भी पचा डाला। पहाड़ी भाषाओं के पथरीले शब्द भी इसे अपच का शिकार नहीं बना सके।

भारत में आज भी हिन्दी विरोधी लोगों का एक प्रबल-दल है, जो साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता तथा राजनैतिक स्वार्थ की सिद्धि के लिए इसकी राह में रोड़े अटकाते रहे हैं। उन्हें दो टूक शब्दों में समझा देना चाहिए कि हिन्दी माता के मंदिर में राष्ट्रभाषा रूपी प्रतिमा का अनन्य पुजारी अब इतना कमजोर नहीं है।

हिन्दी को कभी राजाश्रय नहीं मिला। इसके प्रति सत्ता की उदासीनता सतत् कायम रही। लेकिन आज भारत के प्रधानमंत्री हिन्दी के प्रति अपेक्षात्मक रवैया अपनाते देखे जा रहे हैं। विदेशों में जाकर भी वे हिन्दी में भाषण कर हिन्दी के प्रति अपनी अटूट आस्था का परिचय दे रहे हैं। केन्द्रीय सत्ता हिन्दी के विकास एवं संवर्द्धन हेतु आज सजग, सचेष्ट एवं सक्रिय दिखाई दे रही है। अत: अब हमें भी अंग्रेजी भाषा को भगाकर हिन्दी को समृद्ध एवं सुदृढ़ बनाने में सतत् सक्रिय रहना चाहिए।

रामबाग चौड़ी, पो.-रमना,
जिला-मुजफ्फ़रपुर-842002
मो.नं.-9386752177

डूबता हुआ द्वीप

सोफिया छलोत्रे

(हिन्दी अनुवाद : अंजना छलोत्रे)

गाँव खामोश था। यह ऐसा था जैसे अप्रैल में दुनिया एक सेकंड के लिए रुक गई हो, उसने दूर राजसी सूर्यास्त देखा, जीवन सुंदर था। उसने सोचा कि रविवार दोपहर तक सब कुछ शांतिपूर्ण था। मौसम बदल गया लेकिन वह उसे बूम की जांच करने से नहीं रोक पाया। बैश गर्जना वाले समुद्र में चला गया, क्योंकि यह उन चट्टानों से टकराया जो गाँव की रक्षा करती थीं। वह चिंतित होने लगीं। तब गाँव डरने लगे वे कहने लगे कि

''जाग गया है, यह जाग गया है। तुमने क्या किया है?" मैं अंतर के लिए भागी और मौसम उन्मादपूर्ण था, प्रकाश और सभी भूकंप की टोपी से भी बदतर। सदमे में धमाका, धमाका नूर सभी अप्रैल है हालांकि दूर तक दौड़ते हैं। टूटे हुए पेड़ के नीचे जंगल के जंगल से ऊपर तक अलग-अलग अंतर हैं और पहाड़ियों में गाँव का पता लगाते हैं।

वह सब सुन सकती थी चीखें, चीखें और सन्नाटा था। अगर दुनिया में अंधेरा हो जाये तो कोई रोशनी नहीं कोई मशाल नहीं। मृत सन्नाटा, कुछ टकराया और धक्कों और चोटीदार किनारों की विनम्र पहाड़ी को लुढ़काना शुरू कर दिया, सांप और लटके हुए जानवर उसे खा गए। अप्रैल ने पानी में गिरने से ठीक पहले एक लता को पकड़ लिया, वह बेल के ऊपर ऐसे गाने लगी जैसे वह टार्ज़न अप्रैल हो।

सुबह तक एक गुफा में सुरक्षित रूप से उतरी, कम से कम वह कुछ देर को सो गई। भोर होते ही सूरज चमक उठा और उसने गुफा को रोशनी से भर दिया और वह जागने लगी। समुद्र के शोर ने उसे बीमार महसूस किया। अचानक उसने देखा कि पानी अपेल गुफा से बाहर एक पेड़ के ऊपर एक ऊँची जमीन पर भाग गया, ओह माय व्हाट स्विश के नाम पर, फुर्तीले जानवर ने पानी छोड़ दिया और आसमान में कूद गया। वह उसके इतने करीब था कि उसके दिल की धड़कन रुक गई।

एतीथ ने सुना है कि वह अपनी उन्मत्त आवाज में हताशा के साथ आवाज़ के लिए दौड़ी थी। उसे उम्मीद थी कि यह उसका पोषित अप्रैल था, जो उसे जानवर के पास मिला, जो एक विशाल मछली थी, यह उसकी पसंदीदा किताब द लॉस्ट विडो के लिए देखा गया सम्मान जैसा लगता है। रहस्यमयी लड़की ने दौड़ने की कोशिश की लेकिन इससे पहले कि विशाल मछली उसे खाए, वह छलांग नहीं लगा सकी। जैसे ही शक्तिशाली मछली घातक जल में वापस कूदी, वे एक झाड़ीदार दिल में डूब गए। लड़की ने थकी हुई आवाज में अपना नाम मेरा नाम बताया सोफिया है।

आस्ट्रेलिया
उम्र 11वर्ष

...

सूर कुटी परासौली में साहित्यकार डश्व दिनेश पाठक शशि को किया गया सम्मानित।

आज ब्रज भाषा साहित्य परिषद (सूर श्याम सेवा संस्थान चंद्र सरोवर, सूर कुटी, परासौली, गोवर्धन, मथुरा) में 545वें सूर जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मथुरा के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक शशि को महाकवि सूरदास सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया।

महाराज जी जगद्गुरु श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य एवं महाराज जी श्री रमेश दास जी ने डॉ. दिनेश पाठक शशि को शॉल उढ़ाकर, सम्मान पत्र तथा इक्यावन सौ रुपये की राशि प्रदान कर सम्मानित किया। महाराजश्री, श्री राजेन्द्रदास देवाचार्य जी ने डॉ. दिनेश पाठक शशि की ब्रजभाषा की लघुकथा सुनकर अपने पास से पाँच सौ रुपये आशीर्वाद स्वरूप अलग से प्रदान किये।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कवि श्री गोपाल प्रसाद उपाध्याय गोप जी ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ ब्रज के प्रख्यात कवि श्री राधा गोविन्द पाठक जी के काव्य पाठ से हुआ। उसके बाद श्री हरिओम ओम जी, गौरव गर्व, श्री गोपाल प्रसाद उपाध्याय गोप जी आदि व अन्य कवियों ने अपनी रससिक्त रचनाएँ सुनाईं।

डॉ. दिनेश पाठक शशि ने अपनी ब्रजभाषा लघुकथा का पाठ किया। कार्यक्रम का समापन महाराज श्री रमेश दास और महाराजश्री, श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य जी के प्रवचन से हुआ।

विगत दिनों कुल्लू में 'गाती है विभावरी' (काव्य संग्रह और शक्रचाप (कहानी संग्रह) का विमोचन एवं पूर्व कृषि मंत्री ठाकुर सत प्रकाश जी द्वारा सम्मान